



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 193]

नई दिल्ली, सोमवार, मई 25, 2009/ज्येष्ठ 4, 1931

No. 193]

NEW DELHI, MONDAY, MAY 25, 2009/JYAISTHA 4, 1931

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 25 मई, 2009

प्रारंभिक जाँच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित डाई-इथाइल थियो फॉस्फोरिल क्लोराइड के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जाँच।

सं. 14/18/2008-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क का अभिज्ञान, आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली (जिसे एतदपश्चात् नियम भी कहा गया है) 1995 को ध्यान में रखते हुए;

क. प्रक्रिया

1. नीचे वर्णित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है :—

(i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) को नियमों के अंतर्गत घरेलू उद्योग हेतु तथा उसकी ओर से मै. एक्सेल इंडस्ट्रीज लि., मुम्बई के समर्थन से मै. केमिनोवा इंडिया लि., मुम्बई से एक लिखित आवेदन प्राप्त हुआ जिसमें चीन जन. गण. (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के या वहाँ से निर्यातित डाई-इथाइल थियो फॉस्फोरिल क्लोराइड (डी ई टी पी सी) (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया था;

(ii) उपर्युक्त नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसार प्राधिकारी ने जाँच शुरू करने से पहले भारत में स्थित संबद्ध देश के दूतावास को याचिकाकर्ता से पाटनरोधी आवेदन प्राप्त होने की सूचना दी थी;

(iii) घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने कथित आयातों की उपस्थिति, मात्रा एवं प्रभाव की जाँच करने तथा पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की सिफारिश करने जिसे यदि लगाया जाए तो वह घरेलू उद्योग की क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी, पाटनरोधी नियमों के उप-नियम 6(1) के अनुसार चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित डाई-इथाइल थियो फॉस्फोरिक क्लोराइड के आयातों की पाटनरोधी जाँच शुरू करते हुए दिनांक 17 नवम्बर, 2008 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जो भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित हुई।

(iv) प्राधिकारी ने दिनांक 17.11.2008 की जाँच शुरुआत अधिसूचना की प्रति आवेदक के पास उपलब्ध पतों के अनुसार चीन जन गण के ज्ञात निर्यातकों, उत्पादकों, संबंधित देश के दूतावास, प्रयोक्ताओं और घरेलू उद्योग को अग्रेषित की थी और उनसे जाँच शुरुआत अधिसूचना के 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया था।

(v) कुछ हितबद्ध पक्षकारों से प्रश्नावली का उत्तर देने हेतु समय में विस्तार के लिए अनुरोध प्राप्त हुए थे। प्राधिकारी ने समय-सीमा को ध्यान में रखते हुए समय में विस्तार प्रदान किया था।

(vi) उपर्युक्त नियम 6 के उप-नियम (3) के अनुसार प्राधिकारी ने आवेदन का अगोपनीय रूपान्तर सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत में स्थित संबद्ध देश के दूतावास को उपलब्ध कराया था।

(vii) नई दिल्ली स्थित संबद्ध देश के दूतावास को भी जाँच शुरुआत के संबंध में सूचना दी गई थी और दूतावास को उनके देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए सलाह देने का अनुरोध किया गया था। ज्ञात निर्यातकों के नाम एवं पतों के साथ उन्हें भेजे गए पत्र एवं प्रश्नावली की प्रति भी दूतावास को भेजी गई थी।

(viii) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमों के नियम 6 (4) के अनुसार संगत सूचना प्राप्त करने के लिए संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियाँ भेजी थीं।

(ix) उपर्युक्त अधिसूचना की प्रतिक्रियास्वरूप निम्नलिखित निर्यातकों ने उत्तर प्रस्तुत किया है:-

<u>क्र०सं०</u>	<u>कंपनी का नाम</u>
1.	यांग्सिन चेन्शियन केमिकल इंडस्ट्री कं० लि०
2.	लियनयुँगॉंग लिबेन एग्रो-केमिकल कं० लि०
3.	जिंग्टाई पेस्टीसाइड कं० लि०
4.	झेजियांग जिनाँग केमिकल कं० लि०
5.	चाइना क्रॉप प्रोटेक्शन इंडस्ट्री एसोसिएशन

(x) पाटनरोधी नियमों के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना प्राप्त करने के लिए भारत में संबद्ध वस्तु के ज्ञात आयातकों और/या प्रयोक्ताओं को आयातक प्रश्नावली भेजी गई थी।

(xi) निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं से सूचना प्राप्त हुई है:-

<u>क्र०सं०</u>	<u>कंपनी का नाम</u>
1.	मेघमणि ऑर्गेनिक्स लि०
2.	भागीरथ केमिकल्स एंड इंडस्ट्रीज लि०
3.	घडी केमिकल्स लि०

4. पी आई इंडस्ट्रीज
5. एस आई आर आई एस क्रॉप साइंस लि०

(xii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश को प्राधिकारी द्वारा रखी जाने वाली एक सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखा और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण किए जाने के लिए खुला रखा था।

(xiii) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से पिछले तीन वर्षों और जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों के ब्यौरे की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया था। डी जी सी आई एंड एस से सूचना प्राप्त हुई है और आवश्यक समझी गई सीमा तक उसका उपयोग किया गया है।

(xiv) आवेदकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर यह पता लगाने के लिए कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा, सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी एस पी) के आधार पर उत्पादन की लागत और भारत में संबद्ध वस्तुएं बनाने और उनकी बिक्री करने की लागत का परिकलन किया गया था।

(xv) जांच में 1 अप्रैल, 2007 से 31 मार्च, 2008 (पी ओ आई) तक की अवधि शामिल थी। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में अप्रैल 2004- मार्च 2005, अप्रैल 2005-मार्च 2006, अप्रैल, 2006 - मार्च, 2007 और जांच अवधि की समाप्ति तक की अवधि शामिल थी।

(xvi) इस अधिसूचना में *** हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई और प्राधिकारी द्वारा नियमों के अंतर्गत विचार की गई सूचना का प्रतीक है।

ख. विचाराधीन उत्पाद तथा घरेलू समान वस्तु

3. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद डाई-इथाइल थियो फॉस्फोरिल क्लोराइड (डी ई टी पी सी) है जो दुर्गंध युक्त, रंगहीन अथवा हल्का पीला/ऐम्बर कार्बनिक द्रव है। इसका घनत्व 1.196 ग्राम/से.मी.³ होता है। डाई-इथाइल थियो फॉस्फोरिल क्लोराइड पानी में अघुलनशील परन्तु कार्बनिक विलायकों में घुलनशील होता है। यह एक अत्यधिक जहरीला रसायन है जो आँखों एवं फेफड़ों को नुकसान पहुँचा सकता है। इसका प्रयोग कीटनाशकों हेतु मध्यवर्ती के रूप में होता है। बाजार में इसे ओ, ओ डाई-इथाइल फॉस्फोरोक्लोरिडोथियोएट या डी ई टी पी सी के नाम से भी जाना जाता है। डाई-इथाइल थियो फॉस्फोरिल क्लोराइड का रासायनिक सूत्र $C_4H_{10}ClO_2PS$ है। यह कीटनाशकों के उत्पादन में प्रयोग होने वाला मध्यवर्ती है।

4. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि नीचे दिए गए के अनुसार अलग-अलग समानार्थक नामों एवं सीमाशुल्क वर्गीकरणों के अंतर्गत डाई-इथाइल थियो फॉस्फोरिल क्लोराइड का आयात किया जा रहा है:-

- क्लोर, यूर डे डाई-इथाइलथियोफॉस्फोराइल (डॉट फ्रेंच)
- ओ, ओ -डाई इथाइल थियोनोफॉस्फोरिक क्लोराइड

- क्लोरयूरो डे डाईटिलियोफॉस्फोरिलो (डॉट स्पेनिश)
- डाइथोऑक्सीथियोफॉस्फोरिल क्लोराइड
- डाई-इथाइल क्लोरोथियोफॉस्फेट
- डाई-इथाइल फॉस्फोरोक्लोराइडोथियोएट
- इथाइल फॉस्फोरोक्लोराइडोथियोएट ((ई टी ओ) 2 CLPS)
- ओ, ओ डाई-इथाइल फॉस्फोरोथियोनोक्लोराइडेट
- फॉस्फोरोक्लोराइडोथियोइक एसिड, ओ, ओ डाई-इथाइल ईस्टर

चूँकि ये विचाराधीन उत्पाद के सामान्य समानार्थी हैं, अतः याचिकाकर्ता ने इन सभी समानार्थियों को विचाराधीन उत्पाद के अंतर्गत शामिल किए जाने का अनुरोध किया है।

5. विचाराधीन उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत है। परन्तु उपलब्ध सूचना के अनुसार कई सीमाशुल्क वर्गीकरणों के अंतर्गत विचाराधीन उत्पाद का आयात किया जा रहा है, जिनका विवरण निम्नानुसार है:-

		आयात मी. टन में			
क्र.सं.	आई टी सी - कोड	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
1	28121090	-	-	-	1,160
2	28129000	180	-	-	20
3	28273990	320	210	160	-
4	29051100	-	120	160	380
5	29091900	40	-	-	-
6	29095090	20	-	-	-
7	29190090	460	40	240	-
8	29199010	-	-	80	560
9	29199090	-	-	-	600
10	29201000	7,523	6,989	3,220	-
11	29201010	-	-	400	-
12	29201020	-	-	920	-
13	29201100	-	-	80	100
14	29201910	-	-	-	2,078
15	29201920	-	-	160	220
16	29201990	-	-	40	2,175
17	29209010	-	140	40	-
18	29209020	-	-	440	596
19	29209030	-	-	240	760
20	29209090	480	-	-	-
21	29209099	-	-	1,990	3,553
22	29241900	-	-	138	254
23	29310090	270	100	10	140
24	29420011	700	360	-	20
25	29420090	300	95	440	-
26	38089010	178	-	-	-

चूँकि विचाराधीन उत्पाद का आयात अध्याय 28, 29, 30 के अंतर्गत किया गया है अतः जाँच में इन तीनों अध्यायों में विचाराधीन उत्पाद के आयात को शामिल किया गया है। तथापि, सीमाशुल्क वर्गीकरण सांकेतिक मात्र है और वर्तमान जाँच के दायरे पर किसी भी प्रकार से बाध्यकारी नहीं है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

6. पाटनरोधी नियम के नियम 2 (घ) में समान वस्तु को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:-

"समान वस्तु" का तात्पर्य एक ऐसी वस्तु से है जो भारत में पाटित की जा रही जांचाधीन वस्तु से हर प्रकार से समनुरूप या समान वस्तु है अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में दूसरी ऐसी वस्तु, जो यद्यपि हर प्रकार से समान नहीं है, तथापि उसकी विशेषताएँ जाँचधीन वस्तु की विशेषताओं से अत्यधिक मिलती-जुलती हैं।

भारतीय बाजार में निर्यातकों द्वारा बेचे जा रहे उत्पाद और घरेलू उद्योग द्वारा बेचे जा रहे उत्पाद में संभावित अंतर के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित तथा संबद्ध देश से आयातित विचाराधीन उत्पाद में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। भौतिक एवं रसायनिक गुणधर्मों, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य एवं प्रयोग, उत्पाद विनिर्दिशन, कीमत, वितरण एवं विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के रूप में भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित तथा संबद्ध देश से आयातित विचाराधीन उत्पाद तुलनीय हैं। दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। प्रयोक्ताओं द्वारा दोनों का प्रयोग एक-दूसरे के स्थान पर किया जा रहा है। किसी भी विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकार ने इस संबंध में कोई आपत्ति नहीं की है। पाटनरोधी नियमों के अनुसार संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु को याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु के समान वस्तु माना जा रहा है।

ग. घरेलू उद्योग का कार्यक्षेत्र एवं स्थिति

7. पाटनरोधी नियमों के नियम 2 (ख) में घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:-

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न समूचे घरेलू उत्पादकों या ऐसे उत्पादकों से है, जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक प्रमुख भाग बनता है, परन्तु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का एक भाग नहीं माना जाएगा।

यह आवेदन मै0 केमिनोवा इंडिया लि0 द्वारा प्रस्तुत किया गया है और मै0 एक्सेल इंडस्ट्रीज लि0 द्वारा इसका समर्थन किया गया है। इन दोनों घरेलू उत्पादकों ने क्षति संबंधी सूचना प्रस्तुत की है।

घ. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दे

8. मै0 मेघमणि ऑर्गेनिक्स लि0 द्वारा विशेष सिविल आवेदन सं0 2201/2009 के जरिए माननीय गुजरात उच्च न्यायालय में जाँच शुरूआत संबंधी अधिसूचना को चुनौती दी गई थी। दिनांक 8.4.09 को माननीय गुजरात उच्च न्यायालय के डिविजन बेंच द्वारा मामले की सुनवाई की गई थी और निम्नलिखित आदेश के साथ मामले का निपटान किया गया था:-

" विनिर्दिष्ट प्राधिकारी के निर्देश पर श्री हरिन पी. रावल, भारत के सुविज्ञ सहायक महान्यायवादी ने उल्लेख किया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी के क्षेत्राधिकार के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा की गई प्रारंभिक आपत्ति पर कानून के अनुसार याचिकाकर्ता की सुनवाई के पश्चात निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा चार सप्ताह की अवधि के भीतर अर्थात् 7.5.09 तक या उससे पूर्व कार्रवाई की जाएगी एवं निर्णय दिया जाएगा।

उत्तरदाता सं0 2 प्राधिकारी हेतु सुविज्ञ अधिवक्ता द्वारा किए गए उल्लेख के आलोक में याचिकाकर्ता हेतु सुविज्ञ अधिवक्ता उन्हें दिए गए निर्देशों के अंतर्गत याचिका वापस लेने की अनुमति मांगते हैं। तदनुसार, याचिका का निपटान किया गया माना जाता है। "

9 डाई-इथाइल थियो फॉस्फोरिल क्लोराइड के संबंध में पाटनरोधी जाँच की शुरूआत के विरुद्ध मै0 मेघमणि ऑर्गेनिक्स लि0, अहमदाबाद द्वारा दायर विशेष सिविल आवेदन सं0 2201/2009 पर माननीय गुजरात उच्च न्यायालय के डिविजन बेंच के दिनांक 8.4.2009 के निर्देशों के अनुसार प्राधिकारी द्वारा दिनांक 24.4.2009 को अपराह्न 3.00 बजे घरेलू उद्योग, उनके परामर्शदाताओं के साथ मै0 मेघमणि ऑर्गेनिक्स लि0 की सुनवाई की गई थी और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को भी सुनवाई के लिए आमंत्रित किया गया था।

10. मै0 मेघमणि ऑर्गेनिक्स लि0, घरेलू उद्योग तथा निर्यातकों के प्रतिनिधियों ने सुनवाई में भाग लिया था। मै0 मेघमणि ऑर्गेनिक्स लि0, घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों के साथ अन्य हितबद्ध पक्षकारों को निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष अपने तर्क प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया था। हितबद्ध पक्षकारों तथा उनके प्रतिनिधियों की सुनवाई के बाद निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 28.4.2009 तक लिखित अभ्यावेदन तथा दिनांक 1.5.09 तक प्रत्युत्तर प्रस्तुत करने का निर्देश दिया था।

11. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा सुनवाई के अनुसरण में विभिन्न पक्षकारों द्वारा दिए गए अभ्यावेदनों एवं प्रत्युत्तरों का सार निम्नानुसार है:-

क. मै0 मेघमणि ऑर्गेनिक्स लि0 तथा चीन जन गण के निर्यातकों द्वारा

(i) धारा 5 (1) में " घरेलू उद्योग द्वारा या उसकी ओर से " आवेदन प्रस्तुत किए जाने का निर्धारण किया गया है। धारा 5 (1) में उल्लिखित शब्द "घरेलू उद्योग " की परिभाषा धारा 2 (ख) में दी गई है। आवेदन मै0 केमिनोवा द्वारा प्रस्तुत किया गया है जो नियम 2 (ख) में यथापरिभाषित " घरेलू उद्योग " के लिए पात्र नहीं हैं। घरेलू उत्पादन में आवेदक का हिस्सा केवल 28 प्रतिशत है जिसे घरेलू उत्पादन का बड़ा हिस्सा नहीं माना जा सकता है।

(ii) जाँच शुरूआत के पूर्व आवेदक द्वारा निर्दिष्ट प्राधिकारी को सूचित किया गया था कि भारत में संबद्ध वस्तु के तीन उत्पादक हैं। जाँच शुरूआत के समय प्राधिकारी ने इस तथ्य के बावजूद कि घरेलू उत्पादन में आवेदक का हिस्सा केवल 28 प्रतिशत है, भारत में कुल उत्पादन का निर्धारण करने के लिए मतगणना का सहारा नहीं लिया जैसाकि अन्य मामलों में किया गया है। तीसरे उत्पादक के बारे में किसी सूचना के बिना निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा यह जाँच नहीं की जा सकती थी कि आवेदन घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत किया गया है क्योंकि वे कुल घरेलू उत्पादन के "बड़े हिस्से" के संबंध में कोई निष्कर्ष नहीं निकाल सकते थे।

(iii) नियम 2 (ख) में वे उत्पादक शामिल नहीं हैं जिनके विचाराधीन उत्पाद (तथाकथित पाटित वस्तु) के निर्यातकों के साथ संबंध है। आवेदन के अगोपनीय स्मांतर में मै0 केमिनोवा के डेनमार्क स्थित संबंधित कंपनी से संबंध को छिपाया गया है। ऐसी सूचना के अभाव में निर्दिष्ट प्राधिकारी यह निर्णय नहीं ले सकते कि नियम 2 (ख) के अनुसार ऐसे उत्पादकों को शामिल किया जाए या नहीं।

(iv) जाँच शुरूआत संबंधी अधिसूचना में किसी भी तरीके से यह उल्लिखित नहीं है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने अपने विवेकाधिकार का प्रयोग किया और उसमें भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात कर रही डेनमार्क की कंपनी के साथ संबंध के बावजूद आवेदक को पात्र घरेलू उद्योग मानने की अनुमति देने के कारण भी उल्लिखित नहीं हैं।

(v) प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तु के तीन उत्पादक होने की सूचना उपलब्ध होने के बाद भी मै0 सबेरो ऑर्गेनिक्स गुजरात लि0 के उत्पादन को नजरअंदाज किया।

(vi) निर्धारित कानून के अनुसार शुरूआत से पूर्व का निर्धारण करते समय आबद्ध खपत को शामिल नहीं किया जा सकता है जैसाकि कानून के अनुसार अधिदेशित है। मै0 केमिनोवा ने आवेदन के अगोपनीय स्मांतर में वस्तु की किसी आबद्ध खपत के ब्यौरे नहीं दिए और इसके अलावा जाँच शुरूआत अधिसूचना में उसके संबंध में कोई निर्धारण नहीं किया गया था।

(vii) इस चरण में मै0 एक्सेल, जो जाँच शुरूआत के समय आवेदक नहीं था, को सूचना प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है क्योंकि इससे हितबद्ध पक्षकारों के हित प्रतिकूल रूप से प्रभावित होंगे।

(viii) निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा वर्तमान में पाटनरोधी जाँच को रद्द किया जा सकता है क्योंकि यह प्राधिकारी के क्षेत्राधिकार से बाहर है और सांविधिक नियम के विरुद्ध है।

(ix) शुल्क को भूतलक्षी प्रभाव से लागू करने का कोई मामला नहीं बनता है क्योंकि सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9 क (3) की किसी शर्त को पूरा नहीं किया गया है।

(X) सार्वजनिक फाइल की सूची की प्रति, आवेदनों की प्रतियाँ आदि उपलब्ध कराई जानी चाहिए ।

ख. घरेलू उद्योग द्वारा

(i) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों, जो त्रुटिपूर्ण और अनुचित कानूनी सोच पर आधारित हैं, में कोई औचित्य नहीं है । आवेदन में नियम 2 (ख) के साथ पठित नियम 5 (3) के अंतर्गत दी गई अपेक्षा को पूरा किया गया है । अतः आवेदक पाटनरोधी नियमावली के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग का हिस्सा है ।

(ii) घरेलू उद्योग की स्थिति और दायरा दो अलग-अलग अपेक्षाएँ हैं । क्षेत्राधिकार के नाम पर मै0 मेघमणि ने "घरेलू उद्योग के दायरे" का मुद्दा उठाया है और इस बात का उल्लेख नहीं किया है कि इस मामले में अब तक कैसे स्थिति स्पष्ट नहीं की गई है । अतः स्थिति संबंधी अपेक्षा के संबंध में मै0 मेघमणि का तर्क निराधार है ।

(iii) पाटनरोधी नियमावली के अनुसार मै0 कैमिनोवा, जिसका उत्पादन कुल उत्पादन का अधिकांश हिस्सा है, घरेलू उद्योग होने के पात्र हैं । हितबद्ध पक्षकार बार-बार "प्रमुख हिस्सा" दोहरा रहे हैं जबकि अपेक्षा "एक प्रमुख हिस्से" की है । अतः "एक" को छोड़ा जाना भूलवश नहीं है बल्कि इन हितबद्ध पक्षकारों द्वारा जानबूझ कर किया गया है ।

(iv) जाँच शुरुआत से पूर्व मत प्राप्त करने के लिए कोई पूर्वनिर्धारित कानूनी शर्त नहीं है ।

(v) डेनमार्क में मै0 कैमिनोवा की सहायक कंपनी द्वारा किए गए निर्यात संबद्ध देश (चीन जन गण) से इतर देश द्वारा किए गए निर्यात हैं जो नियम 2 (ख) की परिभाषा में शामिल नहीं हैं ।

(vi) मै0 सबैरो ऑर्गेनिक्स को शामिल न किए जाने के मामले में उसे इन आधारों पर शामिल नहीं किया गया कि (क) कंपनी ने उत्पाद में बड़ी मात्रा में कमी की अथवा उसे बंद कर दिया और उत्पाद का आयात शुरू कर दिया तथा (ख) कंपनी ने बड़ी मात्रा में विचाराधीन उत्पाद का आबद्ध रूप से उपयोग किया ।

(vii) आबद्ध खपत पर विचार न किए जाने के संबंध में यह देखा जा सकता है कि यदि ऐसी आबद्ध खपत को शामिल नहीं किया जाता तब भी मै0 कैमिनोवा का उत्पादन न्यूनतम प्रारंभिक सीमा से कहीं अधिक है । इसके अतिरिक्त मै0 सबैरो ऑर्गेनिक्स बाजार में डी ई टी पी सी की बिक्री नहीं करता और संपूर्ण उत्पादन का प्रयोग कर लेता है । अतः इस आधार पर मै0 सबैरो के उत्पादन को शामिल नहीं किया जा सकता है ।

(viii) पाटनरोधी नियमावली के अनुसार यदि आवेदक भारतीय उत्पादन के 25 प्रतिशत से अधिक का उत्पादन करता है तो आवेदन की स्थायी शर्त पूरी होगी । मौजूदा मामले में आवेदक

का उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन के 28 प्रतिशत से अधिक है और मै0 एक्सेल इंडस्ट्रीज, जिनका उत्पादन लगभग 71 प्रतिशत है, द्वारा आवेदन का समर्थन किया गया है।

(ix) अपेक्षाकृत छोटी अवधि में भारी मात्रा में आयात हुए हैं जो इस तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि मार्च 2009 के दौरान न्यूनतम 1,500 मी.टन डी ई टी पी सी का आयात किया गया था और चालू माह में लगभग 2,000 मी.टन के आयात, जो सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किए जा रहे हैं, को स्वीकृति दी जानी है।

(x) अत्यधिक आयात के कारण दोनों घरेलू उद्योगों को अपना उत्पादन कम करने के लिए बाध्य होना पड़ा है और वे उत्पादन लागत से कहीं कम कीमत पर भारी पाटन के कारण क्षति का सामना कर रहे हैं।

(xi) डी ई टी पी सी का प्रयोग कृषि-रसायनों (कीटनाशक) के विनिर्माण के लिए किया जाता है जो मुख्यतः खरीफ के मौसम में प्रयोग होने वाला मौसमी उत्पाद है और दो माह के लिए शुल्क अधिरोपण में विलंब से आयातकों को पूरे एक वर्ष के लिए लाभ प्राप्त होगा। परिपक्वता अवधि से पूर्व के चरण में उच्च न्यायालय में जाने का संपूर्ण प्रयोजन पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण में विलंब करके संबंधित उत्पाद की मौसमी खपत की अवधि प्राप्त करना है।

(xii) मै0 एक्सेल इंडस्ट्रीज ने न केवल पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण हेतु आवेदन का समर्थन किया है बल्कि प्राधिकारी को लागत निर्धारण तथा क्षति संबंधी सूचना भी प्रदान की है।

(xiii) चूंकि आवेदन की स्थिति या घरेलू उद्योग के दायरे के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों में कोई तर्काधार नहीं है अतः भूतलक्षी आधार पर पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण पूर्णतया उचित है।

12. प्राधिकारी द्वारा जाँच

सुनवाई के उपरांत हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों/अनुरोधों की निम्नानुसार जाँच की गई है:-

(क) घरेलू उद्योग के रूप में मै0 कैमिनोवा इंडिया लि0 की पात्रता के संबंध में यह पाया गया कि सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) के नियम 5 (3) के साथ पठित नियम 2 (ख) के अनुसार प्राधिकारी द्वारा यह जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या आवेदन घरेलू उद्योग द्वारा अथवा उसकी ओर से दायर किया गया है।

पाटनरोधी नियमावली के 2 (ख) में निम्नानुसार उल्लेख है:-

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न समूचे घरेलू उत्पादकों या ऐसे उत्पादकों से है, जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक

उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक प्रमुख भाग बनता है, परन्तु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का एक भाग नहीं माना जाएगा;

पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 (3) में निम्नानुसार प्रावधान है:

" निर्दिष्ट प्राधिकारी उप नियम (1) के तहत दायर किए गए आवेदन के अनुसार तब तक जाँच की शुरुआत नहीं करेंगे जब तक कि:-

(क) वे समान वस्तु के घरेलू उत्पादकों द्वारा दिए गए आवेदन के समर्थन अथवा विरोध के स्तर की जाँच के आधार पर यह निर्धारण न कर लें कि आवेदन घरेलू उद्योग द्वारा अथवा उसकी ओर से किया गया है:

परन्तु यह कि किसी जाँच की शुरुआत नहीं की जाएगी यदि आवेदन का स्पष्ट रूप से समर्थन करने वाले घरेलू उत्पादकों का हिस्सा घरेलू उद्योग द्वारा किए गए समान वस्तु के कुल उत्पादन के पच्चीस प्रतिशत से कम हो, और

(ख) वे आवेदन में प्रदत्त साक्ष्य की सटीकता और समुचितता की जाँच करेंगे और निम्नलिखित के संबंध में स्वयं को संतुष्ट करेंगे -

- (i) पाटन,
- (ii) क्षति, जहाँ भी लागू हो; और
- (iii) जाँच शुरुआत का औचित्य सिद्ध करने के लिए जहाँ भी लागू हो, ऐसे पाटित आयातों तथा कथित क्षति के बीच कारणात्मक संबंध

व्याख्या - इस नियम के प्रयोजनार्थ आवेदन को घरेलू उद्योग द्वारा अथवा उसकी ओर से दायर माना जाएगा यदि वह उन घरेलू उत्पादकों द्वारा समर्थित हो जिनका सामूहिक उत्पादन घरेलू उद्योग के उस हिस्से, जो यथास्थिति आवेदन का समर्थन अथवा विरोध कर रहा हो, द्वारा उत्पादित समान वस्तु के कुल उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक हो ।"

यह पाया गया है कि मौजूदा मामले में संबद्ध वस्तु का आयातक होने के कारण मै0 सबैरो ऑर्गेनिक्स के उत्पादन, यदि हो, को छोड़कर घरेलू उत्पादन में आवेदक का हिस्सा 28.83 प्रतिशत है । इसके अतिरिक्त आवेदन एक प्रमुख उत्पादक मै0 एक्सेल इंडस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा समर्थित है जिसका कुल उत्पादन घरेलू उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक है ।

(ख) जाँच शुरुआत से पूर्व मतगणना की अपेक्षा के संबंध में यह सूचित किया जाता है कि जाँच शुरुआत से पूर्व मत प्राप्त करने से संबंधित कोई पूर्व निर्धारित कानूनी आवश्यकता नहीं है । जाँच शुरुआत करते समय प्राधिकारी द्वारा एक विस्तृत पड़ताल करना अपेक्षित नहीं है लेकिन नियम 5 (3) के तहत निर्धारित शर्तों के प्रति संतुष्ट होना अपेक्षित है । घरेलू उत्पादकों तथा

उनके उत्पादन की पुष्टि के लिए संबंधित प्रशासनिक विभाग से संगत ब्यौरे उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था ।

(ग) यह तर्क निराधार है कि प्राधिकारी को इस बात की सूचना होने के बावजूद कि भारत में संबद्ध वस्तु के तीन उत्पादक हैं, प्राधिकारी ने मै0 सबैरो ऑर्गेनिक्स के उत्पादन पर विचार नहीं किया । संबंधित प्रशासनिक विभाग से मै0 सबैरो ऑर्गेनिक्स सहित घरेलू उत्पादकों तथा उनके उत्पादन से संबंधित ब्यौरे उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था । रसायन एवं पेट्रो-रसायन विभाग ने केवल मै0 कैमिनोवा तथा मै0 एक्सेल इंडस्ट्रीज के बारे में ही सूचना प्रदान की । इस सूचना से आवेदक द्वारा अपने आवेदन में इस संबंध में दी गई सूचना की पुष्टि हुई । जाँच की शुरुआत के उपरान्त मै0 सबैरो ऑर्गेनिक्स से भी अपना उत्तर प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था लेकिन अभी तक कोई उत्तर नहीं मिला है । घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोधों से यह भी पता चला कि मै0 सबैरो ऑर्गेनिक्स ने उत्पादन में काफी मात्रा में कमी की अथवा उसे रोक दिया और आयात शुरू कर दिए तथा आबद्ध रूप से उत्पाद का उपयोग भी किया ।

(घ) यह तर्क भी सही नहीं है मै0 कैमिनोवा ने आवेदन के अगोपनीय स्मांतर में डेनमार्क स्थित अपनी मूल कंपनी के साथ अपने संबंध को छिपाया था । वास्तव में डेनमार्क में स्थित मूल कंपनी से संबंध से जुड़े तथ्यों को छिपाया नहीं गया था । प्राधिकारी ने जाँच शुरुआत से पहले विशेष रूप से इस संबंध में सूचना माँगी थी और आवेदक द्वारा तथ्य प्रस्तुत किए गए थे ।

(ङ) यह अनुरोध सही नहीं है कि मै0 कैमिनोवा इंडिया लि0 की मूल कंपनी मै0 कैमिनोवा डेनमार्क द्वारा भारत को किए गए निर्यातों के कारण मै0 कैमिनोवा इंडिया लि0 का घरेलू उद्योग का दर्जा खत्म हो जाता है । मूल कंपनी द्वारा किए गए निर्यात संबद्ध देश अर्थात् चीन जन गण से नहीं थे अतः उन्हें पाटित वस्तु नहीं माना जा सकता है । माननीय सी ई एस टी ए टी ने अपने विभिन्न निर्णयों में यह स्पष्ट उल्लेख किया है कि केवल संबद्ध देशों के मामले में ही घरेलू उद्योग तथा संबंधित निर्यातकों के संबंधों की जांच की जानी चाहिए । बिरला एरिक्सन लि0 बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी [2001 (127) ई-एल टी 363 (टी आर आई - डी ई एल)] के मामले में माननीय सी ई एस टी ए टी ने निम्नानुसार निर्णय दिया था:

" आवेदकों का प्रतिनिधित्व करने वाले वकील का उपर्युक्त तर्क पूर्ण रूप से नियमावली के नियम 2 (ख), जो घरेलू उद्योग को परिभाषित करता है, में उल्लिखित अपवर्जन पर आधारित है । यह परिभाषित करने के बाद कि घरेलू उद्योग का तात्पर्य उन घरेलू उत्पादकों से है जिनका संबद्ध वस्तु का सामूहिक उत्पादन कुल घरेलू उत्पादन में प्रमुख हिस्सा रखता है, कुछ श्रेणियों को उसमें शामिल नहीं किया गया है । अपवर्जित श्रेणियाँ वे घरेलू उत्पादक हैं जो कथित रूप से पाटित वस्तु के निर्यातकों से संबंध रखते हैं, जो कथित रूप से पाटित वस्तु के आयातकों से संबंध रखते हैं अथवा जाँ स्वयं उस वस्तु के आयातक हैं ।" उस वस्तु के आयातक " शब्दों का दायरा क्या है ? घरेलू उत्पादकों, जो संबद्ध वस्तु के आयातक हैं, के इस वर्ग को कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों से संबंध रखने वाले घरेलू उत्पादकों और कथित पाटित वस्तु के आयातकों से संबंध रखने वाले घरेलू उत्पादकों के साथ जोड़ा जाएगा । इस प्रकार घरेलू उत्पादक जो स्वयं आयातक हैं का तात्पर्य उन घरेलू उत्पादकों से है जो स्वयं कथित पाटित वस्तु के आयातक हैं । दूसरे शब्दों में उन घरेलू उत्पादकों को "घरेलू उद्योग" की परिभाषा में से अपवर्जित नहीं किया जाएगा जो स्वयं संबद्ध देश से कथित पाटित वस्तु के आयातक नहीं हैं ।"

(च) यह आरोप लगाया गया है कि मै0 कैमिनोवा ने संबद्ध वस्तु की आबद्ध खपत की है और निर्धारित कानून के अनुसार जाँच शुरूआत से पूर्व निर्धारण करते समय आबद्ध खपत को शामिल नहीं किया जा सकता है। मै0 कैमिनोवा द्वारा आवेदन के अगोपनीय सारांश में संबद्ध वस्तु की अपनी आबद्ध खपत का ब्यौरा न दिए जाने के कारण वह घरेलू उद्योग माने जाने के लिए पात्र नहीं है। यह पाया गया है कि मै0 कैमिनोवा ने बिक्री शीर्ष के अंतर्गत क्र०सं० 1 पर प्रोफार्मा IV क के तहत अपनी याचिका में अपनी आबद्ध खपत दर्शाई है हालांकि वह नाम मात्र के लिए है। इसके अलावा यदि आबद्ध खपत की मात्रा को शामिल न किया जाए तो भी शेष मात्रा 28.01 प्रतिशत है जो पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत 25 प्रतिशत की निर्धारित प्रारंभिक सीमा से अधिक है।

(छ) यह तर्क निराधार है कि मै0 एक्सेल इंडस्ट्रीज लि०, जो जाँच की शुरूआत के समय आवेदक नहीं था, को बाद में सूचना प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। यह देखा गया है कि मै0 एक्सेल इंडस्ट्रीज लि०, जो घरेलू उत्पादन का 71 प्रतिशत से भी अधिक हिस्सा रखने वाला एक प्रमुख उत्पादक है, ने आरंभिक चरण से ही याचिका का समर्थन करने के साथ समग्र क्षति अवधि और जाँच अवधि के दौरान अपने उत्पादन और घरेलू बिक्री के संबंध में प्राधिकारी को संगत सूचना/आंकड़े प्रस्तुत किए हैं।

(ज) जैसाकि नियम 6 (7) के अंतर्गत पूर्व निर्धारित है, विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई सूचनाओं की अगोपनीय प्रतियाँ रखने वाली एक सार्वजनिक फाइल तैयार की गई है। अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने उस फाइल का अवलोकन किया है और अपेक्षित सूचनाओं की प्रतियाँ प्राप्त की हैं। याचिकाकर्ता सार्वजनिक फाइल तैयार किए जाने की इस पद्धति से पूर्णतः परिचित है और वह आवश्यक सूचनाओं की अपेक्षित प्रतियाँ प्राप्त करने के लिए सार्वजनिक फाइल का निरीक्षण कर सकता था।

13. डाईइथाइल थियो फॉस्फोराइल क्लोराइड (डी-ई टी पी सी) के संबंध में पाटनरोधी जाँच की शुरूआत के विरुद्ध मै0 मेघमणि ऑर्गेनिक्स लि०, अहमदाबाद और अन्य हितबद्ध पक्षकारों की ओर से किए गए अनुरोधों तथा मौजूदा मामले में पाटनरोधी जाँच की शुरूआत के समर्थन में घरेलू उद्योग की ओर से किए गए अनुरोधों की विस्तृत जाँच और उन पर सावधानी से विचार करने बाद और संगत नियमों तथा निर्णयों के आधार पर यह अभिमत दिया गया है कि मै0 एक्सेल इंडस्ट्रीज लि० द्वारा समर्थित मै0 कैमिनोवा इंडिया लि० घरेलू उद्योग का हिस्सा है और प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी जाँच की शुरूआत इस संबंध में पाटनरोधी नियमावली तथा कानून के क्षेत्राधिकार के भीतर आती है।

घ. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन

14. प्राधिकारी ने ज्ञात चीनी निर्यातकों को पूर्व निर्धारित रूप में तथा तरीके से सूचना प्रदान करने के लिए प्रश्नावली भेजी थी। निम्नलिखित कंपनियों से प्रश्नावली के उत्तर प्राप्त हुए -

क्र०सं०

कंपनी का नाम

1. येगजिन चेन्शियन कैमिकल इंडस्ट्रीज कं० लि०
2. त्रिगानगगांग लिबेन एगो-कैमिकल कं० लि०

3. जिगताई पैस्टिसाइड कं० लि०
4. झेजियांग जिनांग कैमिकल कं० लि०

उत्तर देने वाले निर्यातकों के लिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुसार व्यक्तिगत पाटन मार्जिन का निर्धारण किया है और बाजार अर्थव्यवस्था दर्जे की जाँच की है।

सामान्य मूल्य

बाजार अर्थव्यवस्था दावों की जाँच

15. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विगत तीन वर्षों में पाटनरोधी जाँचों के संबंध में भारत तथा अन्य डब्ल्यू टी ओ सदस्यों द्वारा चीन जन गण को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है। अतः पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 8 (2) के अनुसार चीन जन गण को गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है जो पाटनरोधी नियमावली के अनुसार निर्यातक देश या व्यक्तिगत निर्यातकों द्वारा उपर्युक्त अवधारणा के खंडन के अध्वधीन है।

16. यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैराग्राफ 8 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की अवधारणा का खंडन किया जा सकता है यदि चीन जन गण के निर्यातक पैराग्राफ 8 के उप पैराग्राफ (3) में निर्दिष्ट मानदंड के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करें तथा उसके विपरीत अवधारणा को सिद्ध करें। चीन जनवादी गणराज्य से संबद्ध वस्तु के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार संबंधी प्रश्नावली के उत्तर में पैराग्राफ 8 के उप-पैराग्राफ (3) में यथा उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित पर विचार कर सकें कि क्या:-

क) चीन जन. गण. में कच्ची सामग्री, प्रौद्योगिकी की लागत एवं श्रम, उत्पादन, बिक्रियों और निवेश सहित कीमतों, लागतों एवं निविष्टियों के संबंध में संबंधित फर्मों के निर्णय, पूर्ति एवं मांग को प्रदर्शित करने वाले बाजार संकेतकों के जवाब में और इस संबंध में सरकार के किसी विशेष हस्तक्षेप के बगैर लिए जाते हैं और क्या प्रमुख निविष्टियाँ वास्तविक रूप से बाजार मूल्यों को प्रतिबिम्बित करती हैं;

ख) ऐसी फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से आगे लायी गई विशेष रूप से परिसम्पत्तियों के अवमूल्यन, बट्टे खाते में डाली गई अन्य राशियाँ, वस्तु विनिमय व्यापार और ऋणों की क्षतिपूर्ति द्वारा भुगतान के संबंध में अत्यधिक विकृतियों के अध्वधीन हैं;

ग) ऐसी फर्में दिवालियापन और सम्पत्ति कानूनों के अध्वधीन हैं जो इन फर्मों के प्रचालन के लिए कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी प्रदान करते हैं और *

घ) विनिमय दर परिवर्तन बाजार दर पर किए जाते हैं।

17. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जाँच परिणाम संबंधी नोटिस जारी किए जाने के पश्चात संबद्ध देश से संबद्ध उत्पादों के विभिन्न उत्पादकों एवं निर्यातकों ने प्रश्नावली तथा बाजार अर्थव्यवस्था प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है और गैर-बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी पूर्वानुमान का खण्डन किया है। संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के उत्तर देने वाले उत्पादकों/निर्यातकों के सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु उत्तर देने वाले उत्पादकों एवं निर्यातकों की प्रश्नावली एवं बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी प्रश्नावली के उत्तर की जाँच निम्नानुसार की गई है :-

(i) प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसी स्थिति में जहाँ कम्पनी का कोई एक पणधारक, कम्पनी में उल्लेखनीय हिस्सा रखने वाली राज्य के स्वामित्व वाली/नियंत्रित सत्ता है, तो उस स्थिति में राज्य के हस्तक्षेप को नकारा नहीं जा सकता, जिसके लिए मौके पर जाँच सहित आगे और जाँच किए जाने की आवश्यकता है। इसके अलावा निर्यातकों ने इस बात के निर्धारण हेतु कि मूलभूत निविष्टियों की कीमतें, बाजार मूल्य को काफी प्रभावित करती हैं कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है। उत्पादकों ने कच्ची सामग्री के आपूर्तिकर्ताओं के नाम प्रकट किए हैं और उनकी कानूनी स्थिति को अभिज्ञात किया है। कम्पनी ने इस तथ्य के निर्धारण के लिए कि निविष्टियाँ प्रचलित अंतरराष्ट्रीय कीमतों पर प्राप्त की गई हैं, कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है। यह नोट किया गया है कि चीन के उत्पादकों ने फॉस्फोरस पेन्टासल्फाइड को सबसे महत्वपूर्ण कच्ची सामग्री के रूप में अभिज्ञात किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पीली फॉस्फोरस का डीइटीपीसी में लागतों का 20-25% हिस्सा बनता है। घरेलू उद्योग का तर्क था कि वास्तव में चीन में पीली फॉस्फोरस की कीमत का बाजार मूल्यों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। इसके लिए मौके पर सत्यापन सहित आगे और जाँच किए जाने की आवश्यकता है।

(ii) उपर्युक्त को देखते हुए स्वामित्व एवं नियंत्रण लागतों एवं कीमतों तथा व्यापार निर्णयों पर उनके प्रभाव तथा इस बात के निर्धारण कि क्या निविष्टियों की कीमतों का बाजार मूल्य पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है, के संबंध में उपर्युक्त मुद्दों की जाँच लंबित रहने तक प्राधिकारी का यह मत है कि मौके पर सत्यापन सहित आगे जाँच लंबित रहने तक, प्रारंभिक जाँच हेतु चीन जन.गण. के उत्पादकों-निर्यातकों को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान नहीं किया जा सकता।

18. स्वामित्व एवं नियंत्रण, तथा लागत एवं कीमतों तथा व्यापार निर्णयों पर उनके प्रभाव संबंधी उपर्युक्त मुद्दों की जाँच के लंबित रहने तक, प्राधिकारी का यह मत है कि सामान्य मूल्य के प्रारंभिक निर्धारण हेतु चीन के इस उत्पादक-निर्यातक को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान नहीं किया जा सकता है।

ड. सामान्य मूल्य का निर्धारण

19. जैसा कि उपर दर्शाया गया है, संबद्ध देश से उत्तर देने वाले निर्यातकों के संबंध में बाजार अर्थव्यवस्था निर्धारण जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं, जिनकी आगे और जाँच एवं सत्यापन किया जाना अपेक्षित है। अतः प्रारंभिक जाँच परिणाम के प्रयोजनार्थ, चीन के उत्तर देने वाले निर्यातकों एवं उत्पादकों द्वारा अपने बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी दावे तथा व्यक्तिगत व्यवहार संबंधी दावे की आगे जाँच एवं सत्यापन लंबित रहने तक प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियम के अनुबंध-1 के पैरा-7 के आधार पर चीन में सामान्य मूल्य का अनंतिम निर्धारण किया है।

20. इस संबंध में पाटनरोधी नियम के अनुबंध-1 के पैरा-7 में यह प्रावधान है कि :-

'गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयात के मामले में, उचित लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए भारत में समान उत्पाद के लिए वास्तविक रूप से भुगतान किया गया अथवा भुगतान योग्य आवश्यकतानुसार पूर्णतया समायोजित कीमत सहित, सामान्य मूल्य का निर्धारण तीसरे देश की बाजार अर्थव्यवस्था में कीमत अथवा परिकलित मूल्य के आधार पर अथवा भारत सहित ऐसे किसी तीसरे देश से अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहाँ यह संभव नहीं है, किसी अन्य आधार पर किया जाएगा। संबद्ध देश के विकास के स्तर तथा उक्त उत्पाद को देखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा समुचित पद्धति से एक उचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश का चुनाव किया जाएगा और चुनाव के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना पर विचार किया जाएगा। बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी अन्य देश के संबंध में इसी प्रकार के किसी अन्य विषय पर की गई जांच हेतु, जहाँ उचित हो, समय सीमा पर विचार किया जाएगा। जांच से संबंधित सभी हितबद्ध पक्षकारों को उपर्युक्त बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के चयन के संबंध में अविलम्ब सूचना दी जाएगी और अपनी टिप्पणियाँ देने के लिए उचित समय दिया जाएगा।'

21. प्रारंभिक अधिसूचना में प्राधिकारी ने यह संकेत दिया है कि आवेदक ने दावा किया था कि चीन जन.गण. एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था है और भारत, चीन एवं डेनमार्क ही विश्वभर में विचाराधीन उत्पाद के ज्ञात उत्पादक हैं। याचिकाकर्ता ने बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्ययों एवं लाभ सहित भारत में उत्पादन लागत के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। प्राधिकारी ने अनुबंध-1 के पैरा-7 के अनुसार सभी हितबद्ध पार्टियों से टिप्पणियाँ आमंत्रित की थीं। तथापि आवेदकों एवं चीन के उत्पादकों सहित किसी भी हितबद्ध पार्टी ने इस प्रयोजनार्थ एक उचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश का चुनाव कर प्राधिकारी के समक्ष कोई वास्तविक तथ्य नहीं रखा है। घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि इस संबंध में भारत को चीन के लिए एक उचित प्रतिनिधि माना जाना चाहिए और तदनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जाना चाहिए। घरेलू उद्योग के इस दावे के संबंध में कि उत्पादन सुविधाएँ केवल तीन देशों - चीन, भारत तथा डेनमार्क में है किसी भी विरोधी पार्टी ने आपत्ति नहीं उठाई है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि डेनमार्क एक विकसित देश है और चीन के उत्पादकों के लिए एक तीसरे देश के रूप में उचित नहीं रहेगा।

22. मुद्दों की आगे जांच लंबित रहने तक, प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ, प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियम के अनुबंध-1 के पैरा-7 के संदर्भ में उपलब्ध तर्क संगत आधार पर चीन में सामान्य मूल्य का अनंतिम निर्धारण किया है। तदनुसार, चीन के सभी निर्यातकों के लिए विचाराधीन उत्पाद के सामान्य मूल्य का उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अनंतिम रूप से परिकलन किया गया है। सभी प्रमुख निविष्टियों की अंतरराष्ट्रीय कीमतों पर विचार करते हुए सामान्य मूल्य का परिकलन किया गया है। उत्तर देने वाले निर्यातकों द्वारा किए गए दावों के आधार पर खपत संबंधी मानकों पर विचार किया गया है, घरेलू उद्योग के आधार पर परिवर्तन लागत तथा एसजीए व्ययों का आकलन किया गया है। ब्याज को शामिल न करते हुए कारखाना द्वार लागत के ***% समुचित लाभ मार्जिन को जोड़कर सामान्य मूल्य का परिकलन किया गया है जो निम्नानुसार है :-

कच्ची सामग्री की लागत	अम.डॉ./किग्रा.
परिवर्तन लागत	***
एसजीए व्यय एवं वित्तीय लागत	***

लाभ मार्जिन	***
परिकलित सामान्य मूल्य	***

च. निर्यात कीमत

क. सहयोगी निर्यातक

23. प्राधिकारी ने अपनी निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु उत्तर देने वाले निर्यातकों द्वारा किए गए सभी निर्यातों पर विचार किया है। कुछेक मामलों में, वस्तुओं की बिक्री भारत में सीधे उपभोक्ताओं को तथा चीन में असंबद्ध व्यापारियों के माध्यम से की गई है। भारतीय उपभोक्ताओं को की गई बिक्री सीआईएफ आधार पर तथा चीन के असंबद्ध व्यापारियों के जरिए की गई बिक्री कारखाना द्वार आधार पर की गई है। निर्यातकों ने कारखाना द्वार निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए, समुद्री भाड़े, बीमा, कमीशन, अंतर्देशीय भाड़े, अन्य सहायक शुल्क, बैंक प्रभार तथा ऋण लागत में समायोजनों का दावा किया है। तथापि, यह देखा गया है कि उत्तर देने वाले निर्यातकों द्वारा भुगतान किए गए वैट तथा प्रतिपूर्ति के विषय में किसी प्रकार का समायोजन प्रकट नहीं किया गया है; यद्यपि एक निर्यातक को बीजक मूल्य के *** की दर पर वैट का भुगतान करना अपेक्षित है और वह निर्यात पर भुगतान किए गए वैट के एक हिस्से की प्रतिपूर्ति पाने का हकदार होता है। वैट समायोजनों सहित किए गए दावों के स्पष्टीकरण एवं सत्यापन के लंबित रहने तक प्राधिकारी ने इन व्ययों हेतु कटौती करने के पश्चात निर्यात कीमत का निर्धारण किया है।

	इकाई	यांगजिन चेनटेन	लियानयंगगैंग लिबेन	जिंगताई	झेजियांग
निर्यात मात्रा	किग्रा.	***	***	***	***
प्रति इकाई सीआईएफ निर्यात कीमत	अम. डॉ./किग्रा.	***	***	***	***
कीमत समायोजन		***	***	***	***
• समुद्री भाड़ा	अम. डॉ./किग्रा.	***	***	***	***
• बीमा	अम. डॉ./किग्रा.	***	***	***	***
• कमीशन	अम. डॉ./किग्रा.	***	***	***	***
• अंतर्देशीय भाड़ा	अम. डॉ./किग्रा.	***	***	***	***
• अन्य सहायक शुल्क	अम. डॉ./किग्रा.	***	***	***	***
• ऋण लागत	अम. डॉ./किग्रा.	***	***	***	***
• बैंक प्रभार	अम. डॉ./किग्रा.	***	***	***	***
• वैट अधिमान	अम. डॉ./किग्रा.	***	***	***	***
• कुल समायोजन	अम. डॉ./किग्रा.	***	***	***	***
कारखाना द्वार निर्यात कीमत	अम. डॉ./किग्रा.	***	***	***	***

(ख) सहयोगी निर्यातक

24. असहयोगी निर्यातकों के संबंध में सहयोगी निर्यातकों के आंकड़ों के आधार पर न्यूनतम आयात कीमत पर विचार किया गया है। कारखाना द्वार स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए सहयोगी निर्यातकों के मामलों में अनुमत्य समुद्री भाड़े इत्यादि जैसे समायोजनों के बराबर समायोजनों को अनुमति दी गई है। इस पद्धति को अपनाते हुए प्राधिकारी द्वारा कारखाना द्वार स्तर संबद्ध वस्तुओं हेतु असहयोगी निर्यातकों के संबंध में निर्यात कीमत *** अम. डॉल./किग्रा. निर्धारित की गई है।

छ. पाटन मार्जिन

25. निर्धारित सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत पर विचार करते हुए, जैसाकि उपर स्पष्ट किया गया है, प्राधिकारी ने निम्नानुसार पाटन मार्जिन का निर्धारण किया है :-

	इकाई	यांगजिन चेनटेन	लियानयंगगैंग लिबेन	जिंगताई	झेजियांग	असहयोगी निर्यातक
सामान्य मूल्य	अम.डॉ./किग्रा.	***	***	***	***	***
निर्यात कीमत	अम.डॉ./किग्रा.	***	***	***	***	***
पाटन मार्जिन	अम.डॉ./किग्रा.	***	***	***	***	***
पाटन मार्जिन %	रेंज %	81.05	59.41	50.10	64.68	107.05

ज. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

26. डब्ल्यूटीओ करार के अनुच्छेद 3.1 तथा पाटनरोधी नियम के अनुबंध-II में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद हेतु घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव, तथा (ख) पाटित आयातों के मात्रा प्रभाव के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव हेतु एक विषयपरक जांच का प्रावधान किया गया है। प्राधिकारी द्वारा इस बात की जांच की जानी अपेक्षित है कि क्या भारत में समग्र अर्थों में या उत्पादन अथवा खपत की तुलना में आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में, प्राधिकारी द्वारा इस बात की जांच की जानी अपेक्षित है कि क्या आयातक देश में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का उद्देश्य अन्यथा मूल्यों को काफी हद तक कम करना है अथवा ऐसी मूल्य वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी हद तक बढ़ गई होती।

27. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियम के अनुबंध-II के पैरा (IV) में निम्नानुसार उल्लिखित है :-

"संबद्ध घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संबद्ध आर्थिक कारकों का एक मूल्यांकन करना और उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले संकेतकों का मूल्यांकन करना शामिल होगा, इसमें बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर प्राप्ति या क्षमता का उपयोग; कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, सामान, रोजगार, मजदूरी वृद्धि, पूंजीगत निवेश को बढ़ाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल हैं।"

प्राधिकारी ने क्षति एवं कारणात्मक संबंध के विषय में हितबद्ध पार्टियों के तर्कों को नोट कर लिया है और उचित स्थानों पर इन मुद्दों को उठाया है। प्राधिकारी ने तथ्यों और हितबद्ध पार्टियों के तर्कों पर विचार करते हुए क्षति मानदण्डों की जांच की है।

क). मांग एवं बाजार हिस्सा

28. प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों तथा सभी स्रोतों से आयातों के जोड़ को भारत में मांग अथवा उत्पाद की अनुमानित खपत के रूप में परिभाषित किया है। इस प्रकार आकलित मांग नीचे तालिका में दी गई है।

मांग	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (जांच अवधि)
कुल आयात	मी. टन	10,470	8,055	8,758	12,616
बिक्री-घरेलू उद्योग	मी. टन	7,378	6,154	4,622	7,669
मांग	मी. टन	17,848	14,209	13,380	20,285
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	79.61	74.97	113.66

यह देखा गया है कि वर्ष 2005-06 तथा वर्ष 2006-07 के बीच उत्पाद की मांग में अत्यधिक गिरावट आई थी और तत्पश्चात उसमें उल्लेखनीय वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

(ख) आयात मात्रा एवं बाजार हिस्सा

29. प्राधिकारी ने (क) याचिकाकर्ता (सहायक स्रोतों से प्राप्त आयात आंकड़ों के आधार पर) (ख) डीजीसीआई एण्ड एस से प्राधिकारी द्वारा प्राप्त सूचना तथा (ग) उत्तर देने वाले निर्यातक द्वारा प्रस्तुत संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा संबंधी आंकड़ों की जांच की है। यह नोट किया गया है कि डीजीसीआई एण्ड एस में सूचित आयातों की मात्रा व्यापक नहीं है, जो इस बात के कारण हो सकता है कि आयातों को अलग-अलग सीमाशुल्क वर्गीकरण में निकासी प्रदान की गई है, जैसा कि सहायक स्रोत के आंकड़ों से देखा जा सकता है। डीजीसीआई एण्ड एस से प्राप्त एक विशिष्ट आयातक से संबंधित सभी आयातों से यह बात पुनः साबित हो गई थी। अतः प्राधिकारी ने सहायक स्रोतों से प्राप्त सूचना पर विश्वास किया है। रिकॉर्ड में उपलब्ध में विभिन्न आयात आंकड़ों के आधार पर चीन जन.गण. की आयात मात्रा को न्यूनतम सीमा से अधिक धाराया गया है।

संबद्ध देश एवं अन्य देशों की आयात मात्राएं निम्नानुसार रही हैं :-

आयात मी. टन में	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (जांच अवधि)
चीन जन.गण.	मी. टन	10,470	8,055	8,620	12,361
अन्य देश	मी. टन	-	-	138	254
कुल आयात	मी. टन	10,470	8,055	8,758	12,616

यह देखा गया है कि चीन के आयातों में वर्ष 2005-06 में गिरावट आई थी परंतु इसके पश्चात इसमें वृद्धि हुई थी। जांच अवधि के दौरान हुई वृद्धि अत्यधिक उल्लेखनीय थी। यह भी नोट किया गया है कि चीन जन.गण. के आयात भारत में विचाराधीन उत्पाद के कुल आयातों का एक अत्यधिक उल्लेखनीय हिस्सा बनते हैं।

(ग) मांग में बाजार हिस्सा

30. भारतीय उत्पादकों को विभिन्न स्रोतों से हुए आयातों एवं बिक्री को देखते हुए भारत में मांग में संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से की जांच की गई है। वास्तविक स्थिति निम्नानुसार हैं :-

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (जांच अवधि)
घरेलू उद्योग	%	41.34	43.31	34.55	37.81
चीन जन.गण.	%	58.66	56.69	64.42	60.94
अन्य देश	%	0.00	0.00	1.03	1.25

यह देखा गया है कि चीन जन.गण. से मांग में पाटित आयातों के बाजार हिस्से में आधार वर्ष में 58.66% की तुलना में जांच अवधि में 60.94% की वृद्धि हुई है तथापि समनुरूपी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा 41.34% से घटकर 37.81% रह गया। यद्यपि पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई तथा निर्यातों में गिरावट आई तथापि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा पूर्व में प्राप्त स्तरों से कम था।

(घ) उत्पादन के संबंध में पाटित आयातों का हिस्सा

31. प्राधिकारी ने पाया कि घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में संबद्ध देश से पाटित आयातों में वृद्धि हुई है, जैसाकि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है :-

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (जांच अवधि)
चीन से आयात	मी. टन	10,470	8,055	8,620	12,361
घरेलू उद्योग का उत्पादन	मी. टन	9003	7938	6200	9533
घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में पाटित आयात	%	116.29	101.46	139.02	129.67

(ड.) क्षमता एवं क्षमता उपयोग

32. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता एवं क्षमता उपयोग को निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :-

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (जांच अवधि)
क्षमता मी. टन	मी. टन	11,500	11,500	11,500	12,000
क्षमता उपयोग %	%	78	69	54	79

यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में वर्ष 2006-07 तक गिरावट आई, परन्तु उसके बाद जांच अवधि के दौरान इसमें वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि 2006-07 के दौरान उत्पादन में कमी अन्य कारकों की वजह से आई थी। यद्यपि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन में पुनः वृद्धि हुई, परन्तु इस बात के मद्देनजर कि देश में इस उत्पाद की मांग अत्यधिक है, यह अभी भी बहुत कम है।

घ. उत्पादन

33. घरेलू उद्योग के उत्पादन का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है:

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (जांच अवधि)
उत्पादन मी. टन में	मी. टन	9003	7938	6200	9533
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	88.173	68.87	105.88
मांग	मी. टन	17,847	14,208	13,380	20,285
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	79.61	74.97	113.66
मांग की तुलना में उत्पादन	%	50.45	55.87	46.34	46.99

यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन में वर्ष 2006-07 तक गिरावट आई। तथापि उत्पादन में आई कमी, मांग में आई कमी की तुलना में अधिक थी, जो यह दर्शाता है कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग ने विगत में अत्यधिक बाजार हिस्सा गंवाया। जांच अवधि के दौरान जब मांग में तेजी से वृद्धि हुई, पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग उत्पादन में वृद्धि नहीं कर सका। मांग में जहां लगभग 14 प्रतिशत की वृद्धि हुई, वहीं उत्पादन केवल लगभग 6 प्रतिशत बढ़ा।

छ. बिक्री की मात्रा

34. घरेलू उद्योग की बिक्री की मात्रा का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:-

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
घरेलू बिक्री	मी. टन	7378	6154	4622	7669
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	83.41	62.65	103.95
मांग	मी. टन	17,847	14,208	13,380	20,285
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	79.61	74.97	113.66
मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा	%	41.34	43.31	34.55	37.81

यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग को बिक्री में वर्ष 2006-07 तक तेजी से गिरावट आई। यद्यपि इस उत्पाद की मांग में भी गिरावट आई थी, तथापि बिक्री में आई गिरावट, मांग में आई गिरावट से कहीं अधिक थी। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को काफी बाजार हिस्सा गंवाना पड़ा। उत्पाद की मांग में जांच अवधि के दौरान उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इसके बावजूद घरेलू उद्योग अपने उत्पादन और बिक्री की सीमा तक अपनी बिक्री की मात्रा में वृद्धि करने में असमर्थ रहा। वास्तव में बाजार हिस्सा भी बढ़कर पूर्ववर्ती स्तर पर नहीं आ सका था। पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की बिक्री प्रभावित हो रही है।

ज. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

35. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों से भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों को महत्वपूर्ण सीमा तक कम करना अथवा कीमत में वृद्धि को रोकना था जो अन्यथा एक महत्वपूर्ण सीमा तक हो गई होती। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ भारत औसत उत्पादन लागत (सी ओ पी), भारत औसत निवल बिक्री प्राप्ति (एन एस आर) तथा घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत (एन आई पी) की तुलना संबद्ध देशों से हुए आयातों की पहुँच लागत से की गई है।

36. निवल बिक्री प्राप्ति सभी छूटों एवं करों को घटाने के बाद ज्ञात की गई है। आयातों के पहुँच मूल्य की गणना हेतु संबद्ध आयातों के सी आई एफ मूल्य में 1 प्रतिशत का प्रहस्तन प्रभाव तथा लागू मूल सीमाशुल्क को उसमें जोड़ दिया गया है। आयातों के पहुँच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से की गई और यह पाया गया कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है।

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (जांच अवधि)
आयातों की सी आई एफ कीमत	रुपये/किग्रा.	76.98	72.18	67.22	78.49
आयातों की पहुँच कीमत	रुपये/किग्रा.	93.30	83.84	76.38	87.20
बिक्री कीमत	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
कीमत कटौती	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***
कीमत कटौती %	% सीमा	10 to 15	20 to 25	20 to 25	5 to 10
बिक्री की लागत	रुपये/किग्रा.	***	***	***	***

यह देखा गया है कि आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है। जहाँ-जहाँ लागत में वृद्धि हो रही थी, चीन के उत्पादक अपनी कीमतें कम कर रहे थे। यह भी नोट किया गया है कि वर्ष 2006-07 में उल्लेखनीय बाजार हिस्सा गंवा देने के बाद घरेलू उद्योग ने बाजार हिस्सा फिर प्राप्त करने के उद्देश्य से आयातित उत्पाद और घरेलू उत्पाद के बीच के कीमत अंतर को कम कर दिया। परिणामतः जांच अवधि के दौरान बाजार हिस्से में वृद्धि हुई।

झ. कम कीमत पर बिक्री

37. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कम कीमत पर बिक्री क्षति के आकलन का एक महत्वपूर्ण सूचक है। कम कीमत पर की गई बिक्री की सीमा ज्ञात करने के लिए क्षति रहित कीमत ज्ञात की गई और इसकी तुलना संबद्ध वस्तुओं के पहुँच मूल्य से की गई। घरेलू उत्पादकों के लिए क्षति रहित कीमत का आकलन प्राधिकारी पद्धति के अनुसार तथा उच्चतम न्यायालय के निर्णय को ध्यान में रखते हुए किया गया है और इसमें जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की लागत पर समुचित विचार किया गया है। विश्लेषण से ज्ञात होता है कि संबद्ध आयातों का पहुँच मूल्य क्षति रहित कीमत से बहुत कम था, जिसका निर्धारण निम्नानुसार किया गया है:-

कीमत रुपये/मी. टन में	Rs/Kg
सी आई एफ कीमत	78.49
पहुँच मूल्य	87.20
क्षतिरहित कीमत	***
कम कीमत पर बिक्री	***
बिक्री कटौती का % (सीमा)	35 to 40

अ. कीमत हास/अवमूल्यन

38. प्राधिकारी द्वारा जांच की गई कि क्या पाटित आयातों के प्रभाव का उद्देश्य भारत में समान वस्तु की कीमतों का अवमूल्यन करना अथवा कीमत में वृद्धि को रोकना है, जो अन्यथा हुई होती। इस प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने निर्माण और बिक्री की लागत की प्रवृत्ति की जांच की और इसकी तुलना आयातों की बिक्री कीमत और पहुँच कीमत से की। यह नोट किया गया कि जहां पिछले वर्षों के दौरान उत्पादन लागत में निरंतर वृद्धि हुई है, वहीं घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में 2006-07 तक वृद्धि हुई, परन्तु जांच अवधि के दौरान इसमें गिरावट आई। यह भी नोट किया गया जाता है कि प्रत्येक वर्ष के दौरान घरेलू उद्योग की कीमत वृद्धि उत्पादन लागत में हुई वृद्धि से बहुत कम थी। आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का हास हो रहा था।

ट. लाभ/हानि

39. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है:-

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (जांच अवधि)
कर पूर्व लाभ	सूचीबद्ध	100	28	(55)	(143)
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	सूचीबद्ध	100	46	(22)	(85)
प्रति इकाई बिक्री लाभ					
ब्याज पूर्व	सूचीबद्ध	100	56	(35)	(82)
ब्याज पश्चात	सूचीबद्ध	100	36	(85)	(136)

घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में उल्लेखनीय गिरावट आई। घरेलू उद्योग जहां पहले लाभ अर्जित कर रहा था (चाहे लाभ का स्तर कम रहा हो), उसे वर्ष 2006-07 से वित्तीय घाटा शुरू हो गया। यद्यपि याचिकाकर्ता ने स्वीकार किया है कि वर्ष 2006-07 के दौरान उसका घाटा एक अतिरिक्त कारक अर्थात् उत्पादन में कमी (मांग में आई कमी के कारण) के कारण हुआ था, तथापि यदि इस कारक को समायोजित किया जाए तो यह देखा जा सकता है कि जांच अवधि के दौरान लाभप्रदता में बहुत ही तेजी से गिरावट आई।

ठ. क्षति से संबंधित अन्य मापदंडों की जांच

40. घरेलू उद्योग की मात्रा एवं कीमतों पर पाटित आयातों और आयातों की मात्रा तथा मूल्य, क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग एवं घरेलू उद्योग की बिक्री तथा विभिन्न खण्डों के बाजार हिस्सों में मांग के पैटर्न जैसे क्षति के प्रमुख सूचकों के प्रभाव की जांच के बाद प्राधिकारी द्वारा अन्य आर्थिक मानदंडों, जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति के अस्तित्व को इंगित कर सकते हैं, की जांच भी निम्नानुसार की गई है:-

i) नियोजित पूँजी पर आय

41. नियोजित पूँजी पर आय से संबंधित सूचना नीचे तालिका में दी गई है।

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (जाँच अवधि)
नियोजित पूँजी पर आय-एनएफए आधार	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	49.58	-29.38	-86.00

प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लिए नियोजित पूँजी पर आय में इस सीमा तक गिरावट आई कि वह वर्ष 2006-07 तथा जाँच अवधि में ऋणात्मक हो गई थी।

ii) नकद प्रवाह

42. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह की स्थिति पर पाटन के प्रभाव की जाँच करने के लिए नकद लाभ की प्रवृत्ति की जाँच की है। घरेलू उद्योग के नकद लाभ से संबंधित सूचना निम्नलिखित तालिका में दी गई है।

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (जाँच अवधि)
नकद लाभ	लाख रूपए	1328.04	750.54	136.98	-353.75
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	57	10	(27)

यह देखा जा सकता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के नकद लाभों में तेजी से गिरावट आई। यह कमी प्रत्येक वर्ष निरंतर जारी रही और इस सीमा तक पहुँच गई कि जाँच अवधि में घरेलू उद्योग को नकद हानि का सामना करना पड़ा।

iii) घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक:

43. पाटित आयातों से इतर अन्य कारकों, जो घरेलू बाजार में कीमतों को प्रभावित कर सकते हैं, के विश्लेषण के लिए लागत संरचना में परिवर्तन, घरेलू उद्योग में प्रतिस्पर्धा और प्रतिस्पर्धी स्थानापन्नों की जाँच की गई है। संबद्ध आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम है। अतः यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि आपसी प्रतिस्पर्धा इतनी अधिक है कि उसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की कीमतों में कमी आई।

iv) मालसूचियाँ

44. घरेलू उद्योग की मालसूचियों में परिवर्तन निम्नानुसार था:-

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (जाँच अवधि)
अंतिम स्टॉक	मी. टन	502	403	369	314
बिक्री के दिनों के लिए मालसूची	दिन	25	28	3	28

यह नोट किया गया है कि वर्ष 2006-07 के दौरान घरेलू उद्योग की मालसूचियों में कमी आई लेकिन जाँच अवधि में उसमें वृद्धि हुई।

v) उत्पादकता

45. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता की प्रवृत्ति उत्पादन की प्रवृत्ति के समान रही है। वर्ष 2006-07 तक उत्पादकता में कमी आई लेकिन जाँच अवधि के दौरान उसमें वृद्धि हुई।

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जाँच अवधि
प्रति कर्मचारी उत्पादन	सूचीबद्ध	100	86	73	114
प्रति दिन उत्पादकता	सूचीबद्ध	100	88	69	104

vi) रोजगार तथा मजदूरी

46. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग में रोजगार में कमी आई जबकि प्रदत्त मजदूरी में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है।

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जाँच अवधि
रोजगार	सूचीबद्ध	100	103	95	94
मजदूरी	सूचीबद्ध	100	101	94	110

vii) वृद्धि

47. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2006-07 तक अनेक मानदंडों पर घरेलू उद्योग की वृद्धि नकारात्मक थी जिसका आंशिक कारण माँग में कमी होना था। यद्यपि जाँच अवधि में मात्रा संबंधी मानकों में वृद्धि सकारात्मक थी तथापि वह माँग में वृद्धि से कम थी। किसी भी स्थिति में कीमत संबंधी मानदंडों में वृद्धि निरंतर नकारात्मक ही रही।

viii) पूँजीगत निवेश जुटाने की क्षमता

48. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा कोई उल्लेखनीय निवेश नहीं किया गया था। इसके अलावा दोनों कम्पनियाँ बहु-उत्पाद कम्पनियाँ हैं। तथापि उत्पाद के निरंतर पाटन से घरेलू उद्योग की पूँजीगत निवेश जुटाने की क्षमता पर निश्चित रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

1. विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए अन्य मुद्दों की जाँच

49. याचिका में अनेक मानदंडों से संबंधित सूचना के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि दायर की गई याचिका में विभिन्न क्षति मानदंडों के संबंध में अलग-अलग सूचना दी गई है। किसी भी प्रकार से याचिकाकर्ता द्वारा आबद्ध खपत बहुत अधिक उल्लेखनीय नहीं है। इसके अतिरिक्त याचिका में मालसूचियों, लाभ, रोजगार तथा विस्तार हेतु पूँजीगत निवेश के संबंध में सूचीबद्ध आधार पर सूचना शामिल हैं।

50. प्राधिकारी नोट करते हैं कि गत वर्ष की तुलना में जाँच अवधि के दौरान उत्पाद की माँग में पर्याप्त वृद्धि हुई है। वास्तव में याचिकाकर्ता ने अपने आवेदन में आरोप लगाया है कि वर्ष 2006-07 में माँग में उल्लेखनीय गिरावट आई थी जिसके कारण बिक्री मात्रा में कमी आई।

51. तथापि यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान उत्पादन तथा खपत की तुलना में आयातों में सापेक्ष रूप से वृद्धि हुई है। यद्यपि पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जाँच अवधि में आयातों के बाजार हिस्से में कमी आई तथापि यह पिछले वर्षों की तुलना में फिर भी अधिक है।

52. जाँच अवधि में कीमतों में वृद्धि के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान कीमतों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। यहाँ तक कि जाँच अवधि में भी कीमतें *** रूपए प्रति किग्रा. के निम्न स्तर से बढ़कर *** रूपए प्रति किग्रा. के स्तर पर पहुँच गई थीं। समग्र आयात कीमत में ***% की वृद्धि का अर्थ यह नहीं है कि घरेलू उद्योग पर आयातों का प्रतिकूल प्रभाव नहीं हो रहा है।

53. उत्पादन, बिक्री तथा क्षमता उपयोग के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षमता उपयोग का स्तर पाटित आयातों की अनुपस्थिति में घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त किए जा सकने वाले स्तर से बहुत कम है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त की गई मात्रा पर उस कीमत के साथ विचार किया जाना चाहिए जिस पर उस वस्तु की बिक्री की गई है। यह नोट किया गया है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में तेजी से गिरावट आई।

54. हालांकि इस पर ध्यान दिया गया है कि उत्पाद की माँग में वृद्धि हुई है, यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग पाटित आयातों की अनुपस्थिति में अप्रयुक्त क्षमताओं का प्रयोग करके और अधिक मात्रा का उत्पादन तथा बिक्री कर सकता था। यह नोट किया गया है कि वर्ष 2004-05 और जाँच अवधि के बीच आयातों में 2438 मी. टन की वृद्धि हुई थी जबकि घरेलू उद्योग की अप्रयुक्त क्षमता 2467 मी. टन थी। दूसरे शब्दों में यदि उस अवधि में पाटित आयातों में वृद्धि न हुई होती तो घरेलू उद्योग अपनी पूरी क्षमता का प्रयोग कर सकता था। अतः यह नहीं माना जा सकता है कि आयातों में समस्त वृद्धि का कारण देश में कमी का होना था। किसी भी स्थिति में लाभ/हानि, निवेश पर आय तथा नकद लाभ जैसे मानदंडों के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन में कमी आई।

55. प्रस्तावित पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण के परिणामस्वरूप कीटनाशकों के उत्पादन में घरेलू उद्योग को कथित रूप से अनुचित लाभ मिलने के संबंध में प्राधिकारी का मत है कि पाटनरोधी शुल्क का प्रयोजन अनुचित कीमत निर्धारण को समाप्त करना है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों के विपरीत यह कहा जा सकता है कि अन्य कीटनाशक विनिर्माताओं की अनुचित कीमत वाले आयातों तक पहुँच उन्हें उन विनिर्माताओं की तुलना में अनुचित लाभ दे रही है जो डीईटीपीसी का स्वयं आबद्ध उत्पादन कर रहे हैं।

56. वर्ष 2006-07 की तुलना में 2007-08 के दौरान कीमत कटौती में कमी वर्ष 2006-07 में आयातों में अत्यधिक वृद्धि के कारण हुई, जब मांग बढ़ गई थी और घरेलू उद्योग ने बाजार हिस्सा गंवा दिया था। घरेलू उद्योग का तर्क है कि वर्ष 2006-07 के दौरान बाजार हिस्से के नुकसान के कारण घरेलू उद्योग ने सुधारात्मक कार्रवाई करते हुए घरेलू एवं आयातित उत्पाद के कीमत अन्तर को कम कर दिया जिसका परिणाम जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में हुई वृद्धि के रूप में देखा जा सकता है। तथापि यह स्पष्ट है कि जहां क्षति अवधि के दौरान मांग में 2438 मी. टन की वृद्धि हुई, वहीं घरेलू उद्योग की बिक्री में केवल 291 मी. टन की वृद्धि हुई, जबकि आयातों में 2146 मी. टन की वृद्धि हुई थी। साथ ही, जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के पास 2467 मी. टन की अप्रयुक्त क्षमता थी। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि ऐसी स्थिति में जब घरेलू उद्योग के पास मांग में हुई वृद्धि के बराबर अप्रयुक्त क्षमता उपलब्ध थी, तब मांग में हुई समस्त वृद्धि पर पाटित आयातों ने कब्जा कर लिया।

57. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि याचिकाकर्ता को 'अन्य कारकों' के कारण घाटा हुआ होगा अथवा लाभ कम हुआ होगा, प्राधिकारी के ध्यान में ऐसा कोई 'अन्य कारण' नहीं लाया गया। जांच के दौरान अब तक ऐसा कोई अन्य कारक नहीं देखा गया, जिसने घरेलू उद्योग की लाभप्रदता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला हो।

ज. क्षति संबंधी निष्कर्ष

58. क्षति से संबंधित विभिन्न मानदण्डों की जांच से प्राधिकारी ने देखा है कि चीम से हुए आयातों में निरपेक्ष रूप से तथा भारत में उत्पादन एवं खपत के सापेक्ष वृद्धि हुई। उत्पाद के आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही थी। इसके अलावा जहां क्षति अवधि के दौरान बिक्री कीमतों में बढ़ोतरी होने के बावजूद उत्पादन लागत में वृद्धि होती रही, वहीं उत्पादन लागत में वृद्धि बिक्री कीमत में हुई वृद्धि से बहुत ही कम थी। इस प्रकार आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में मंदी आई और कीमत वृद्धि पर रोक लग गई जिनमें अन्यथा पाटित आयातों के अभाव में वृद्धि हुई होती। घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में यह पाया गया कि उत्पाद की मांग में वर्ष 2006-07 तक अत्यधिक गिरावट आई और इसके परिणामतः 2006-07 तक घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री में भी गिरावट आई। इसके परिणामस्वरूप वर्ष 2006-07 तक घरेलू उद्योग को बाजार हिस्से में उल्लेखनीय नुकसान का सामना करना पड़ा। यद्यपि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने कुछ बाजार हिस्सा फिर हासिल कर लिया था, तथापि यह पहले दर्ज स्तर की तुलना में बहुत ही कम था।

59. ऐसी स्थिति में जब बाजार में इस उत्पाद की मांग बहुत अधिक थी, घरेलू उद्योग को अप्रयुक्त क्षमता का सामना करना पड़ा। घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में निरंतर गिरावट आई और इतनी तेजी से आई कि घरेलू उद्योग को 2006-07 से वित्तीय घाटा होने लगा, जो जांच अवधि के दौरान और भी बढ़ गया। नियोजित पूंजी से आय और नकद लाभ का रूख भी वही था जो लाभ का था। जांच अवधि के दौरान नियोजित पूंजी से आय और नकद लाभ दोनों नकारात्मक हो गए। वर्ष 2006-07 तक घरेलू उद्योग की वृद्धि अनेक मानदण्डों के संदर्भ में नकारात्मक थी, जो तत्पश्चात् मात्रात्मक मानदण्डों (हालांकि घरेलू उद्योग पाटन के अभाव में अधिक मात्रा प्राप्त कर सकता था) के संदर्भ में सकारात्मक हो गई। तथापि कीमत संबंधी मानदण्डों के संदर्भ में वृद्धि सदैव नकारात्मक बनी रही। इस प्रकार अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि घरेलू उद्योग को वार्षिक क्षति हुई है।

ट. कारणात्मक संबंध एवं अन्य कारक

60. प्राधिकारी ने इस संबंध में नियमावली को ध्यान में रखते हुए हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत तर्कों के संदर्भ में पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध के अस्तित्व की जांच की है।

ठ. अन्य ज्ञात सूचीबद्ध मानदण्डों का प्रभाव

61. प्राधिकारी ने अन्य कारकों द्वारा हुई क्षति, यदि कोई हो, का अलग आकलन करने के उद्देश्य से कारणात्मक संबंध और पाटनरोधी नियमावली में निर्धारित अन्य असम्बद्ध कारकों की जांच की है।

(क) तीसरे देश से आयातों की मात्रा एवं कीमतें

प्राधिकारी नोट करते हैं कि अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयात नगण्य हैं। तीसरे देश से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती थी।

(ख) व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां एवं विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

प्राधिकारी ने ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धति नहीं देखी जिसे घरेलू उद्योग तथा अन्य भारतीय उत्पादकों ने अपनाया हो। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धति नहीं है।

(ग) मांग में संकुचन एवं खपत की पद्धति में परिवर्तन

प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2005-06 और 2006-07 के दौरान उत्पाद की मांग में अत्यधिक गिरावट आई। परिणामतः घरेलू उद्योग की बिक्री की मात्रा और उसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग पर इस अवधि तक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। तथापि, यह भी नोट किया गया कि घरेलू उद्योग की बिक्री की मात्रा में गिरावट इस उत्पाद की मांग में आई गिरावट से अधिक थी। जांच अवधि के दौरान मांग में एक बार फिर उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। यद्यपि घरेलू उद्योग ने कुछ बाजार हिस्सा फिर हासिल कर लिया था, परंतु यह पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में बहुत कम था। इसके अलावा, क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में निरंतर गिरावट आती रही। अतः प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति मांग में संकुचन के कारण नहीं हुई।

(घ) प्रौद्योगिकी विकास

इस उत्पाद की उत्पादन प्रौद्योगिकी में कोई विकास नहीं हुआ है। अतः प्रौद्योगिकी का सम्भावित विकास घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं है।

(ड.) घरेलू उद्योग का निर्यात कार्य निष्पादन

अवधि	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
मात्रा (मी. टन में)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	96	96	122

उत्पाद के सन्दर्भ में घरेलू उद्योग का कोई उल्लेखनीय निर्यात कार्यकलाप नहीं है। तथापि निर्यात निष्पादन में वर्ष 2005-06 और 2006-07 के दौरान गिरावट आई और आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें वृद्धि देखी गई। अतः निर्यात निष्पादन में संभावित गिरावट घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं है। तथापि प्राधिकारी ने कीमत संबंध मानदण्डों पर प्रभाव का आकलन करने के उद्देश्य से केवल घरेलू प्रचालनों पर ही विचार किया है।

(च) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

घरेलू उद्योग की उत्पादकता में 2006-07 तक गिरावट आई परंतु उसके बाद जांच अवधि के दौरान इसमें वृद्धि हुई। तथापि उत्पादकता के स्तरों में हुए परिवर्तनों के बावजूद घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में निरंतर गिरावट देखी गई।

उपर्युक्त के आधार पर प्राधिकारी अनन्तिम रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अन्य कारकों की वजह से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कोई साक्ष्य नहीं है।

(ड) कारणात्मक संबंध को स्थापित करने वाले कारक

62. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में वास्तविक गिरावट आई। पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध को निम्नलिखित आधारों पर सिद्ध किया जाता है :-

(क) आयातों के परिणामस्वरूप बाजार में कीमत कटौती हुई। परिणामतः ऐसी स्थिति में भी, जब घरेलू उद्योग के पास अप्रयुक्त क्षमता उपलब्ध थी, आयातों में वृद्धि होती रही।

(ख) घरेलू उद्योग द्वारा की जा रही कीमत कटौती के कारण ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई जब घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमतों में उत्पादन लागत में हुई वृद्धि के अनुपात में बढौतरी नहीं कर सका।

(ग) पाटित आयातों से हुए कीमत ह्रास के परिणामस्वरूप लाभप्रदता में गिरावट इस सीमा तक आई कि घरेलू उद्योग, जो वर्ष 2005-06 तक लाभ अर्जित कर रहा था, वर्ष 2006-07 से वित्तीय घाटे का सामना करने लगा, जो जांच अवधि के दौरान और भी बढ़ गया।

(घ) पाटित आयातों के कारण लाभप्रदता में आई गिरावट से निर्यात पूंजी से प्राप्त आय, नकद लाभ और परिणामतः नकद प्रवाह के रूप में घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में भी गिरावट आई।

प्राधिकारी का अभिमत है कि उपर्युक्त आधार, पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध के अस्तित्व को स्पष्ट रूप से सिद्ध करते हैं।

ढ. क्षति की सीमा एवं क्षति मार्जिन

63. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग हेतु क्षति रहित कीमतों का निर्धारण किया है। क्षति मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की इस क्षति रहित कीमत की तुलना संबद्ध आयातों के भारित औसत पहुँच मूल्यों से की गई है। क्षति मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

	इकाई	यांगजिन चेन्शियन	लियानयूनगांग लिबेन	जिंगताई	झेजियांग	असहयोगी
क्षति रहित कीमत	अम.डॉ./किग्रा.	***	***	***	***	***
आयातों की पहुँच कीमत	अम.डॉ./किग्रा.	***	***	***	***	***
क्षति मार्जिन	अम.डॉ./किग्रा.	***	***	***	***	***
क्षति मार्जिन	% सीमा	40 से 50	30 से 40	15 से 25	30 से 40	80 से 90

ण. निष्कर्ष

64. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों एवं किए गए निवेदनों तथा प्राधिकारी के पास उपलब्ध तथ्यों, जिन्हें इस जांच परिणाम में दर्ज किया गया है, की जांच करने पर प्राधिकारी अनन्तिम रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि :-

- (क) चीन जन.गण. द्वारा भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात इसके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया है, जिसकी परिणति उत्पाद के पाटन में हुई है।
- (ख) विचाराधीन उत्पाद के पाटन के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।
- (ग) वास्तविक क्षति चीन जन.गण. से पाटित आयातों के कारण हुई है।

त. भारतीय उद्योग का हित तथा अन्य मुद्दे

प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल की जा सके, जो कि देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी शुल्क लागू किए जाने से सम्बद्ध देशों से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

यह स्वीकार किया जाता है कि पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण से संबद्ध वस्तु के प्रयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ेगा। तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं होगी, विशेष रूप से तब जब कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण घरेलू उद्योग की क्षति के निवारण हेतु आवश्यक राशि तक सीमित है। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों के अधिरोपण से पाटन प्रथाओं से हुए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग की गिरावट रुकेगी और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए अधिक विकल्प बनाए रखने में सहायता मिलेगी। पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इससे उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

थ. सिफारिशें

67. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जाँच शुरूआत की सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को दी गई थी और पाटन, क्षति तथा कारणात्मक संबंध के विभिन्न पहलुओं पर सकारात्मक जानकारी प्रस्तुत करने के लिए निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को समुचित अवसर दिया गया था। निर्धारित नियमों के अनुसार पाटन, क्षति तथा पाटन एवं घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध पर प्रारंभिक जांच शुरू करके पूर्ण करने के बाद और संबंध देशों के विरुद्ध सकारात्मक पाटन मार्जिन की अनंतिम रूप से पुष्टि करने के बाद तथा यह निष्कर्ष निकालने के पश्चात् कि ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है, प्राधिकारी का विचार है कि जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को रोकने के लिए अनंतिम उपाय लागू करने की आवश्यकता है। अतः प्राधिकारी संबंध देश से संबंध वस्तु के आयात पर निम्नलिखित रूप में और तरीके से अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लागू करना आवश्यक समझते हैं और उसकी सिफारिश करते हैं।

68. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क के नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी, पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त किया जा सके। तदनुसार, केन्द्र सरकार द्वारा ये सिफारिशें स्वीकार कर लिए जाने की स्थिति में चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित संबंध वस्तु के सभी आयातों पर इस अधिसूचना की तिथि से इसके साथ संलग्न शुल्क तालिका के कॉलम 8 में दी गई राशि के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की जाती है।

क्र. सं.	शीर्ष/उपशीर्ष	वस्तु का विवरण	उद्गम देश	निर्यातक देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क राशि	इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1	29.30	डाई ईथाइल थायो फॉस्फोराइल क्लोराइड (डीइटीपीसी)	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	यांगजिन चेन्शियन केमिकल्स इंडस्ट्री कं. लि.	यांगजिन चेन्शियन केमिकल्स इंडस्ट्री कं. लि.	0.925	प्रति किग्रा.	अम.डॉ.
2	29.30	डाई ईथाइल थायो फॉस्फोराइल क्लोराइड (डीइटीपीसी)	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	लियानयूनगांग लिबेन एग्रो केमिकल्स कं. लि.	लियानयूनगांग लिबेन एग्रो केमिकल्स कं. लि.	0.734	प्रति किग्रा.	अम.डॉ.
3	29.30	डाई ईथाइल थायो फॉस्फोराइल क्लोराइड (डीइटीपीसी)	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	जिंगताई पैस्टीसाइड कं. लि.	जिंगताई पैस्टीसाइड कं. लि.	0.478	प्रति किग्रा.	अम.डॉ.
4	29.30	डाई ईथाइल थायो फॉस्फोराइल क्लोराइड (डीइटीपीसी)	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	झेजियांग एक्सनॉग कं. लि.	झेजियांग एक्सनॉग कं. लि.	0.770	प्रति किग्रा.	अम.डॉ.

5	29.30	डाई ईथाइल थायो फॉस्फोराइल क्लोराइड (डीइटीपीसी)	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	उपर्युक्त को छोड़कर अन्य कोई युग्म		1.362	प्रति किग्रा.	अम. डॉ.
6	29.30	डाई ईथाइल थायो फॉस्फोराइल क्लोराइड (डीइटीपीसी)	चीन जन. गण.	चीन जन. गण. को छोड़कर अन्य कोई देश	कोई	कोई	1.362	प्रति किग्रा.	अम. डॉ.
7	29.30	डाई ईथाइल थायो फॉस्फोराइल क्लोराइड (डीइटीपीसी)	चीन जन. गण. को छोड़कर अन्य कोई देश	चीन जन. गण.	कोई	कोई	1.362	प्रति किग्रा.	अम. डॉ.

आगे की प्रक्रिया

69. प्रारंभिक जाँच परिणाम की अधिसूचना के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी:-

- (क) प्राधिकारी इन जाँच परिणामों पर सभी हितबद्ध पक्षकारों से टिप्पणियाँ आमंत्रित करेंगे और इन पर अंतिम जाँच परिणाम में विचार किया जाएगा;
- (ख) प्राधिकारी द्वारा निर्यातकों, आयातकों, आवेदक तथा संबंधित समझे जाने वाले अन्य हितबद्ध पक्षकारों को अलग-अलग लिखा जा रहा है जो इन जाँच परिणामों के प्रकाशन की तिथि से चालीस दिन के भीतर अपने-अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं। कोई अन्य संबंधित पक्षकार भी इन जाँच परिणामों के प्रकाशन की तिथि से चालीस चालीस दिन के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकता है;
- (ग) प्राधिकारी विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा मौखिक रूप व्यक्त विचारों को सुनने के लिए सुनवाई का आयोजन करेंगे;
- (घ) प्राधिकारी आवश्यक समझी गई सीमा तक आगे सत्यापन करेंगे;
- (घ) प्राधिकारी अंतिम जाँच परिणाम घोषित करने से पहले अनिवार्य तथ्यों का खुलासा करेंगे।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 25th May, 2009

Preliminary Findings**Subject : Anti-dumping investigations concerning imports of Diethyl Thio Phosphoryl Chloride originating in or exported from China PR.**

No. 14/18/2008-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended from time to time (hereinafter referred as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 thereof, as amended from time to time (hereinafter referred as the AD Rules);

A. PROCEDURE

2. The procedure described herein below has been followed:

- i. The Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), under the above Rules, received a written application from M/s Cheminova India Limited, Mumbai and supported by M/s Excel Industries Ltd., Mumbai for and on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Diethyl Thio Phosphoryl Chloride (DETPC) (hereinafter also referred to as the subject goods); originating in or exported from China PR (hereinafter referred to as the subject country);
- ii. The Authority notified the Embassy of China PR in India about the receipt of the anti-dumping application made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;
- iii. The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 17th November, 2008 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of Diethyl Thio Phosphoryl Chloride originating in or exported from China PR, in accordance with the sub-Rule 6(1) of the AD Rules to determine the existence, degree and

effect of alleged dumping and to recommend the amount of anti dumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

- iv. The Designated Authority sent a copy of Initiation Notification dated 17th November 2008 to the Embassy of China PR in India, known exporters from China PR, importers, consumers and the domestic industry as per the addresses made available by the applicant and requested them to make their views known in writing within 40 days of the Initiation Notification.
- v. Request for extension of time to file the questionnaires' response was received from some interested parties. The Authority granted the time extension, keeping in view the time constraints.
- vi. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known exporters and to the Embassy of China PR in India in accordance with Rule 6(3) supra;
- vii. The Embassy of China PR in India was informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) of the AD Rules with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters was also sent to them along with the names and addresses of the known exporters.
- viii. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the known exporters in the subject country in accordance with Rules 6(4) of the AD Rules.
- ix. In response to the above notification, the following exporters have responded.

S.N.	Company's Name
1.	Yangxin Chentian Chemical Industry Co., Ltd.
2.	Lianyungang Liben Agro-chemical Co., Ltd.
3.	Xingtai Pesticide Co., Ltd.
4.	Zhejiang Xinnong Chemical Co., Ltd.
5.	China Crop Protection Industry Association

- ix. Questionnaire was sent to the known importers and/or consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules;
- x. In response, information has been received from the following importers/ users;

S.N.	Company's Name
1.	Meghmani Organics Ltd.
2.	Bhagiratha Chemicals & Industries Ltd
3.	Gharda Chemicals Ltd.
4.	P. I. Industries
5.	SIRIS Crop Science Ltd.

- xi. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- xii. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigation. Information has been received from the DGCI&S, which has been used to the extent deemed necessary;
- xiii. Optimum cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry.
- xiv. Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2007 to 31st Mar, 2008 (POI). The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the periods April 2004-March 2005, April 2005-March 2006, April 2006-March 2007 and the POI.
- xv. *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis, and so considered by the Authority under the AD Rules.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND DOMESTIC LIKE ARTICLE

3. The product under consideration in the present investigation is Diethyl Thio Phosphoryl Chloride (DETPC), a colourless or light yellow/amber organic liquid having disagreeable odor. It has density of 1.196 g/cm³. Diethyl Thio Phosphoryl Chloride is insoluble in water, but soluble in organic solvents. It is a highly toxic chemic which may irritate eyes and lungs. It is used as an intermediate for pesticides. It is also known as O,O-Diethyl Phosphorochloridothioate or DETPC in the market place, Diethyl Thio Phosphoryl Chloride is having chemical formula C₄H₁₀ClO₂PS. It is an intermediates used in production of pesticides.

4. Petitioner has claimed that Diethyl Thio Phosphoryl Chloride is being imported under different synonyms and different Custom Classifications such as;

- CHLORURE DE DIÉTHYLTHIOPHOSPHORYLE (DOT FRENCH)

- O,O-DIETHYL THIONOPHOSPHORIC CHLORIDE
- CLORURO DE DIETILTIOFOSFORILO (DOT SPANISH)
- DIETHOXYTHIOPHOSPHORYL CHLORIDE
- DIETHYL CHLOROTHIOPHOSPHATE
- DIETHYL PHOSPHOROCHLORIDOTHIOATE
- ETHYL PHOSPHOROCHLORIDOTHIOATE ((ETO) 2CLPS)
- O,O-DIETHYL PHOSPHOROTHIONOCHLORIDATE
- PHOSPHOROCHLORIDOTHIOIC ACID, O,O-DIETHYL ESTER

Since these are common synonyms of the product under consideration, petitioner has requested for inclusion of all these synonyms within the scope of the product under consideration.

5. The product is classified under Chapter 29 in the Custom Tariff Act. But as per available information the product under consideration is being imported under several customs classifications as indicated below:

S.No.	ITC-CODE	Imports in Mt			
		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
1	28121090	-	-	-	1,160
2	28129000	180	-	-	20
3	28273990	320	210	160	-
4	29051100	-	120	160	380
5	29091900	40	-	-	-
6	29095090	20	-	-	-
7	29190090	460	40	240	-
8	29199010	-	-	80	560
9	29199090	-	-	-	600
10	29201000	7,523	6,989	3,220	-
11	29201010	-	-	400	-
12	29201020	-	-	920	-
13	29201100	-	-	80	100
14	29201910	-	-	-	2,078
15	29201920	-	-	160	220
16	29201990	-	-	40	2,175
17	29209010	-	140	40	-
18	29209020	-	-	440	596
19	29209030	-	-	240	760
20	29209090	480	-	-	-
21	29209099	-	-	1,990	3,553
22	29241900	-	-	138	254
23	29310090	270	100	10	140
24	29420011	700	360	-	20
25	29420090	300	95	440	-
26	38089010	178	-	-	-

Since the product under consideration has been imported under Chapter 28, 29 and 38, the investigation extends to imports of the product under consideration in all the three chapters. However, the customs classification is indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

6. With regard to like article, Rule 2(d) of the AD Rules provides as under: -

"like article " means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation;

With regard to the possible difference between the product sold by the exporters in the Indian market and the product sold by the domestic industry, the Authority notes that there is no known difference in product under consideration produced by the Indian industry and exported from subject country. Product under consideration produced by the Indian industry and imported from subject country are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably. None of the opposing interested parties has raised any objection in this regard. Subject goods produced by the petitioner is being treated as like article to the subject goods imported from subject country in accordance with the AD Rules.

C. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY & STANDING

7. Rule 2(b) of the AD Rules defines domestic industry as under:-

(b) "Domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers may be deemed not to form part of domestic industry;

The Application has been filed by M/s Cheminova India Limited and has been supported by M/s Excel Industries Ltd. Both these domestic producers have provided injury information.

D. - OTHER ISSUES RAISED BY INTERESTED PARTIES

8. The initiation notification was challenged by M/s. Meghmani Organics Ltd., Ahmedabad before the Hon'ble Gujarat High Court vide Special Civil Application No. 2201/2009. The matter was heard by the Hon'ble Division Bench of Gujarat High Court on 8.4.2009 disposed of with the following orders:

"Mr. Harin P. Raval, Learned Assistant Solicitor General of India, upon instructions of the Designated Authority, states that the preliminary objection raised by the petitioners as to jurisdiction of the Designated Authority shall be dealt with and decided by the Designated Authority within a period of four weeks i.e on or before 07.05.2009, after hearing the petitioner in this regard in accordance with law. In light of the statement made by the learned counsel for respondent No.2 authority, learned advocate for petitioners seeks permission to withdraw the petition, under instructions. Permission granted. The petition stands disposed of accordingly."

9. As per the directions of the Hon'ble Division Bench of the Gujarat High Court dated 8.4.2009 in the Special Civil Application No. 2201/2009 filed by M/s. Meghmani Organics Ltd., Ahmedabad against the initiation of anti-dumping investigations in respect of Di-ethyl Thio Phosphoryl Chloride(DETPC) the hearing was granted by the Designated Authority on 24.4.2009 at 3.00 PM. M/s. Meghmani Organics Ltd., along with domestic industry, their consultants and other interested parties were invited for the hearing.

10. The representatives of M/s. Meghmani Organics Ltd., domestic industry and exporters attended the hearing. The representatives of M/s Meghmani Organics and domestic Industry along with other interested parties were given opportunity to present their arguments before the Designated Authority. After hearing the interested parties and their representatives, the Designated Authority instructed to submit written submissions by 28.4.2009 and rejoinders by 1.5.2009.

11. The submissions and rejoinders made by various parties in pursuance of the hearing by the Designated Authority are summarized below:

a). **By M/s. Meghmani Organics Ltd. And Exporters from China PR**

- (i) Section 5(1) contemplates filing of application "by or on behalf of the Domestic Industry". The term "Domestic Industry" referred to in Section 5(1) has been defined in Section 2(b). The application has been filed by M/s. Cheminova who does not qualify to be referred to as "Domestic Industry" as defined under Rule 2(b). The applicant accounts for a mere 28% of the domestic production, which cannot be considered as a major or significant proportion of the domestic production.
- (ii) Prior to the initiation, the Designated Authority was informed by the applicant that there were three producers of the subject goods in India. At the time of initiation, the Designated Authority did not resort to polling, as has been done in other cases, to ascertain total production in India, despite the fact that the applicant constituted only 28% of the domestic production. Without information about the third producer, the Designated Authority

- would not have examined whether the application was filed by domestic industry as he could not have reached any conclusion on "major proportion" of the total domestic production.
- (iii) Rule 2(b) excludes producers who have relationship with exporters of product under consideration (alleged dumped article). Fact of relationship of M/s. Cheminova with their related entity in Denmark has been suppressed in the non-confidential version of the application. In the absence of such information, the Designated Authority can not take a view whether to include or exclude such producers in terms of Rule 2(b).
 - (iv) The initiation notification does not indicate in any manner, whatsoever that the Designated Authority had exercised its discretion and the reasons in support thereof to allow the applicant as an eligible domestic industry despite its relationship with the Denmark entity exporting the subject goods to India.
 - (v) The Authority ignored the production of M/s Sabero Organics Gujrat Ltd. despite having the information that there were three producers of the subject goods in India.
 - (vi) As per settled law, captive consumption cannot be included while reaching pre-initiation determination as mandated under law. M/s. Cheminova failed to disclose the details of any captive consumption of goods in the non-confidential version of application and further, there is no determination in respect thereto reflected in the initiation notification.
 - (vii) Subsequent filing of information by M/s. Excel, who was not the applicant at the time of initiation, cannot be permitted at this stage as it seriously jeopardizes the interest of the interested parties.
 - (viii) The antidumping investigations in the present case may be quashed by the Designated Authority as the same are without jurisdiction and against statutory law.
 - (ix) There is no case for retrospective imposition of duty since none of the requirements of Section 9A(3) of Customs Tariff Act, 1975 have been met.
 - (x) The copy of index to the public file, copies of the submissions etc should be provided.

b). **By the Domestic Industry**

- (i) There is no merit in the objections raised by the interested parties which are based on incorrect and misplaced legal understanding. The application satisfied the requirement of the standing under Rule 5(3) read with Rule 2(b). Hence, the applicant constituted domestic industry within the meaning of Anti-Dumping Rules.
- (ii) Standing and scope of domestic industry are two different requirements. In the name of jurisdiction, M/s. Meghmani has raised the issue of "scope of domestic industry" and has not referred to how the standing is not established in this case. Hence the argument of M/s. Meghmani with regard to standing requirement does not hold good.
- (iii) As per Anti-Dumping Rules, M/s. Cheminova qualifies as Domestic Industry whose production constitutes a major proportion. The interested parties repeatedly stating "major proportion" whereas the requirement is "a

- major proportion". Hence, omission of "a" is not accidental but it is deliberate on the part of these interested parties.
- (iv) There is no prescribed legal requirement to resort to polling at pre- initiation of investigation.
 - (v) Exports made by M/s. Cheminova's affiliated Company in Denmark are from a country other than the subject country (China PR) and does not come within the definition of Rule 2(b).
 - (vi) Regarding exclusion of M/s. Sabero Organics, the same was excluded on the grounds that (a) the Company curtailed or stopped production substantially and resorted to imports and (b) the Company substantially captively consumed the Product Under Consideration.
 - (vii) Regarding non-consideration of captive consumption, it would be seen that if such captive consumption is excluded, the production of M/s. Cheminova still remains much higher than the minimum threshold limit. Moreover, M/s. Sabero Organics does not sell DETPC in the market and consume entire production captively. Hence, on this ground, the production of M/s. Sabero could not have been included.
 - (viii) As per Anti-Dumping Rules, the application would satisfy standing requirement if the applicant makes more than 25% of Indian production. In the instant case, the production of the applicant is more than 28% of Indian production and the application has been supported by M/s. Excel Industries whose production accounts for about 71%.
 - (ix) There are massive imports in a relatively short period which is established by the fact that at least 1,500 MT DETPC was imported during March, 2009 and approximately 2,000 MT imports are to be cleared in the current month which are being imported at a price below normal value.
 - x) Due to substantial imports, both the domestic industries have been forced to reduce their production and suffering injury due to massive dumping at a price much below their cost of production.
 - xi) DETPC is used for manufacturing agro-chemicals (insecticides) which are seasonal products largely consumed in Kharif Season. Delaying the imposition of duty by another two months, the importer would get advantage for one full year. The whole purpose for approaching the High Court at pre-mature stage is to delay the imposition of antidumping duty and thereby gaining the period of seasonal consumption of the product concerned.
 - xii) M/s. Excel Industries has not only supported the application for imposition of anti-dumping duty but also provided costing and injury information to the Authority.
 - xiii) As there is no merit in the submissions made by other interested parties with regard to standing of the application or scope of the domestic industry, there is full justification in imposition of anti-dumping duties on retrospective basis.

12. Examination by the Authority

The views/submissions expressed by the interested parties pursuant to the hearing are examined hereunder:

- a) Regarding qualification of M/s Cheminova India Ltd. as Domestic Industry, it is observed that in terms of Rule 2(b) read with Rule 5(3) of the Customs Tariff (Identification, Assessment And Collection Of Anti-Dumping Duty On Dumped Articles And For Determination Of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as the Anti-Dumping Rules), the Authority needs to be satisfied whether the application has been filed by or on behalf of the domestic industry.

Rule 2(b) of the Anti-Dumping Rules provides as follows:

"domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers may be deemed not to form part of domestic industry ;

Rule 5(3) of the Anti-Dumping Rules provides as follows:

"The designated authority shall not initiate an investigation pursuant to an application made under sub-rule (1) unless –

- a) *it determines, on the basis of an examination of the degree of support for, or opposition to the application expressed by domestic producers of the like product, that the application has been made by or on behalf of the domestic industry ;*

Provided that no investigation shall be initiated if domestic producers expressly supporting the application account for less than twenty five per cent of the total production of the like article by the domestic industry, and

- (b) *it examines the accuracy and adequacy of the evidence provided in the application and satisfies itself that there is sufficient evidence regarding –*

- (i) *dumping,*
(ii) *injury, where applicable; and*
(iii) *where applicable, a causal link between such dumped imports and the alleged injury, to justify the initiation of an investigation.*

Explanation. - For the purpose of this rule the application shall be deemed to have been made by or on behalf of the domestic industry, if it is supported by those domestic producers whose collective output constitute more than fifty per cent of the total production of the like article produced by that portion of the domestic industry expressing either support for or opposition, as the case may be, to the application."

It is observed that in the instant case the applicant accounts for 28.83% of the domestic production, while excluding production of M/s Sabero Organics, if any, being an importer of the subject goods. Moreover, the application was supported by M/s Excel Industries Limited, a major producer, whose collective production constitutes more than 50% of the domestic production.

- b) Regarding requirement of polling before initiation it is stated that there is no prescribed legal requirement to resort to Polling before initiation of investigation. At the stage of initiation of investigation, the Authority is not required to hold a detailed enquiry but to satisfy the requirements prescribed under the Rule 5(3). To confirm about the domestic producers and their production the concerned administrative department was requested to provide relevant details.
- c) The contention that the Authority ignored the production of M/s. Sabero Organics, despite the information to the Authority that there were three producers of the subject goods in India does not hold good. The concerned Administrative Department was requested to provide details about the domestic producers and their production including M/s. Sabero Organics. Department of Chemicals & Petrochemicals provided information about M/s. Cheminova and M/s. Excel Industries only. This information further reinforced the information submitted by the applicant in their application in this regard. After initiation of the investigation, M/s. Sabero Organics was also requested to submit their response, but there is no response till date. It is further observed from the submissions made by the Domestic Industry that M/s. Sabero Organics curtailed or stopped production substantially and resorted to imports and also consumed the product captively.
- d) The contention that M/s. Cheminova suppressed their relationship with their parent Company in Denmark in the non-confidential version of the application does not hold good. In fact there was no suppression of facts regarding relationship with the parent Company in Denmark. The Authority had specifically called for information in this regard before initiation and the facts were submitted by the applicant.
- e) The submission that the exports made by M/s Cheminova Denmark, the parent company of M/s Cheminova India Ltd., to India, disqualify the status of the later as domestic industry, is not correct. The exports made by the parent Company were not from the subject country i.e. China PR and hence, the same cannot be treated as dumped article. Hon'ble CESTAT in its various judgements has clearly indicated that the relationship between the domestic industry and related exporters must be examined in the context of subject countries only. In the matter of Birla Ericsson Ltd. Versus Designated Authority [2001 (127) E.L.T. 363 (Tri. - Del.)] Hon'ble CESTAT held as under:

"The above argument of Counsel representing the appellants is solely based on the exclusion contained in Rule 2(b) of the Rules, which defines domestic

industry. After stating that domestic industry means domestic producers whose collective output of the article constitutes a major proportion of the total domestic production, certain categories are excluded there from. The categories excluded are those domestic producers who are related to exporters of the alleged dumped article, those who are related to importers of the alleged dumped article or those who themselves are importers thereof. What is the scope of the words "importers thereof?" This group of domestic producers who are importers thereof are to be grouped along with domestic producers related to exporters of the alleged dumped article and domestic producers related to importers of the alleged dumped article. So taken, the domestic producers who are themselves importers should mean domestic producers who are themselves importers of alleged dumped article. In other words, domestic producers who are not importers of alleged dumped article from the subject country are not to be excluded from the definition of "domestic industry."

- f) It has been alleged that M/s Cheminova has got captive consumption of the subject goods and as per settled law captive consumption cannot be included while reaching pre-initiation determination. Failure of M/s Cheminova to disclose the details of their captive consumption of the subject goods in the non-confidential version of the application makes them ineligible to become domestic industry. It is observed that M/s Cheminova has declared its captive consumption in its petition under Proforma IV A at Sl. No. 1 under the heading sales, however it is very nominal. Further, if the quantity of captive consumption is excluded, the balance quantity still remains 28.01% which is higher than the prescribed threshold limit of 25% under the Anti-Dumping Rules.
- g) The argument that subsequent submission of information by M/s Excel Industries Ltd., who was not the applicant at the time of initiation of investigation, cannot be permitted does not hold good. It is observed that M/s Excel Industries Ltd., a major producer having more than 71% of the domestic production, supported the petition from initial stage along with relevant information/data to the Authority regarding their production and domestic sales during the entire injury period and POI.
- h) As prescribed under the Rules 6(7), a public file containing non -confidential copies of submissions made by various interested parties have been maintained. The same have been visited by other interested parties who have collected copies of the submissions, whichever required. The petitioner is fully aware of this practice of maintenance of Public file and could have inspected the Public file for obtaining requisite copies of the submissions required by them.

13. After detailed examination and careful consideration of the submissions made on behalf of M/s. Meghmani Organics Ltd., Ahmedabad and other interested parties against the initiation of anti-dumping investigations in respect of Diethyl Thio Phosphoryl Chloride(DETPC) and the submissions made on behalf of the domestic industry in support of the initiation of anti-dumping investigations in the instant case and relying

upon relevant Rules and Judgements, it is observed that M/s Cheminova India Ltd., supported by M/s Excel Industries Ltd., constitutes Domestic Industry and the initiation of the anti-dumping investigations by the Authority is well within its jurisdiction under Anti-Dumping Rules and Law in this regard.

D. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN

14. The Authority sent questionnaire to the known Chinese exporters, advising them to provide information in the form and manner prescribed. Response to the questionnaires were received from the following companies –

S.N.	Company's Name
1.	Yangxin Chentian Chemical Industry Co., Ltd.
2.	Lianyungang Liben Agro-chemical Co., Ltd.
3.	Xingtai Pesticide Co., Ltd.
4.	Zhejiang Xinnong Chemical Co., Ltd.

For the responding exporters, Authority has determined individual dumping margin and examined market economy status in accordance with the AD Rules.

NORMAL VALUE

Examination of Market economy claims

15. The Authority, notes that in the past three years China PR has been treated as a non-market economy country in the anti-dumping investigations by India and other WTO Members. Therefore, in terms of para 8(2) of the annexure 1 of AD rules, China PR has been treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the above presumption by the exporting country or individual exporters in terms of the AD Rules.

16. As per Paragraph 8, Annexure I to the AD Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and establish to the contrary. The cooperating exporters/producers of the subject goods from People's Republic of China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-

a) the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;

b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;

c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms; and *

d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate.

17. The Authority notes that several producers and exporters of the subject goods from the subject country have submitted their questionnaire responses and market economy questionnaire responses, consequent upon the initiation notice issued by the Authority and rebutted the non-market economy presumption. The questionnaire responses and the Market economy responses of the responding producers and exporters have been examined for determination of normal value of the responding producers/exporter of the subject goods from the subject country as follows:

(i) The Authority notes that in a situation where one of the shareholders in the company is a State owned/controlled entity having significant share in the company, possibilities of State interference cannot be ruled out, requiring further investigation, including spot verification. Further, the exporters have not provided any evidence to establish that prices of basic inputs substantially reflect market values. The producers have named the raw materials suppliers and identified their legal status. The companies have not provided any evidence to establish that the inputs have been procured at prevailing international prices. It is noted that the Chinese producers have identified phosphorus pentasulphide as the key raw material. The Authority notes that yellow phosphorus constitutes approx. 20-25 % of the costs in DETPC. Domestic industry contended that, in fact, price of yellow phosphorus in China does not substantially reflect market values. This also calls for further investigations, including spot verification.

(ii) In view of the above, pending examination of the above issues regarding ownership & control, its impact on the costs & prices and business decisions of the enterprise and a determination whether the prices of inputs substantially reflect market value, the Authority is of the view that the responding producers - exporters from China PR cannot be granted market economy status for the preliminary determination, pending further investigations, including spot verification.

18. Pending examination of the above issues regarding ownership and control, its impact on the cost and prices and business decisions of the company, and verification of the same, the Authority is of the view that this producer- exporter from China cannot be granted market economy status for the preliminary determination of its Normal Value.

E. Determination of normal value

19. As recorded above there are significant issues of market economy determination in respect of the responding exporters from the subject country, which requires further examination and verification. Therefore, pending further examination and verification of

the claims made by the responding exporters and producers from China PR, in respect of their market economy claims and individual treatment claims, for the purpose of the preliminary finding, the Authority has provisionally estimated the normal value in China on the basis of Para-7 to Annexure-I to the AD Rules.

20. In this connection Para 7 of Annexure I of the AD Rule provides that

In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis if the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments.

21. The Authority indicated, in the initiation notification, that the applicant claimed that China PR is a non market economy and that India, China and Denmark are the only known producers of the product under consideration in the World. Petitioner had determined normal value based on cost of product in India, including selling general & administration expenses and profit. Authority invited comments from all interested parties in accordance to para 7 of Annexure I. However, none of the interested parties, including the applicants and Chinese producers have placed any material fact before

the Authority to select an appropriate market economy third country for the purpose. The domestic industry has submitted that India should be treated as an appropriate surrogate country for China in this matter and the normal value should be determined accordingly. None of the opposing parties have disputed the claim of the domestic industry with regard to production facilities being only in three countries – China, India and Denmark. The Authority also notes that Denmark is a developed country and may not be an appropriate third country for the Chinese producers.

22. Pending further examination of the issues, for the purpose of preliminary determination, the Authority proceeds to provisionally determine the normal value in China on available reasonable basis, in terms of /para 7 of Annexure 1 to the AD Rules. Accordingly, the ex-works Normal Value of the product under consideration for all exporters from China has been provisionally constructed based on facts available. The Normal Value has been constructed taking into account international prices of all the major inputs. Consumption norms has been considered as per claims made by the responding exporters, conversion cost and SGA expenses have been adopted on the

basis of the domestic industry.. After adding a reasonable profit margin of ***% of ex-factory cost excluding interest, constructed normal value works out as under:

	US\$ per Kg
Cost of raw materials	***
Conversion Cost	***
SGA Expenses and Finance cost	***
Profit margin	***
Constructed Normal Value	***

F. EXPORT PRICE

a) CO-OPERATIVE EXPORTERS

23. The Authority has considered all exports made by the responding exporters for determination of their export price. In some cases, goods have been sold to direct customers in India as well as through unaffiliated traders in China. The sales to Indian customers are in CIF term and the sales through Chinese unaffiliated traders are at ex-factory terms. The exporters have claimed adjustments towards ocean freight, insurance, commission, inland freight, other auxiliary fees, bank charges and credit cost to arrive at ex-factory export price. However, it is noticed that no adjustment has been disclosed by the responding exporters towards VAT paid and refund; though an exporter is required to pay VAT @*** of the invoice value and is entitled for a refund of a part of the VAT paid on export. Pending further clarification and verification of the claims made, including the VAT adjustments, the Authority has determined the export price after deduction for these expenses.

	Unit	Yangxin Chentain	Lianyungang Liben	Xingtai	Zhejiang
Export volume	Kg	***	***	***	***
CIF export price per unit	US\$/Kg	***	***	***	***
Price adjustments		***	***	***	***
• Ocean freight	US\$/Kg	***	***	***	***
• Insurance	US\$/Kg	***	***	***	***
• Commission	US\$/Kg	***	***	***	***
• Inland freight	US\$/Kg	***	***	***	***
• Other Auxiliary Fees	US\$/Kg	***	***	***	***
• Credit Cost	US\$/Kg	***	***	***	***
• Bank charges	US\$/Kg	***	***	***	***
• VAT differential	US\$/Kg	***	***	***	***
• Total adjustment	US\$/Kg	***	***	***	***
Ex-factory export price	US\$/Kg	***	***	***	***

b) NON -COOPERATIVE EXPORTERS

24. In respect of non-cooperating exporters, the lowest import price based on the data of co-operating exporters has been taken into account. Adjustments like ocean freight etc. has been allowed at par with the ones allowed in co-operating exporters as above for arriving at export price at ex-factory level. By adopting this method the export price at ex-factory level in respect of non-cooperating exporters for subject goods worked out by the Authority is US\$ *** per kg.

G. DUMPING MARGIN

25. Considering the normal value and export price determined, as explained above, the Authority has determined dumping margin as follows;

	Unit	Yangxin Chentain	Lianyungang Liben	Xingtai	Zhejiang	Non- cooperative
Normal value	US\$/Kg	***	***	***	***	***
Export price	US\$/Kg	***	***	***	***	***
Dumping margin	US\$/Kg	***	***	***	***	***
Dumping margin %	Range %	80-90	55-65	45-55	60-70	100-110

H. INJURY AND CAUSAL LINK

26. Article 3.1 of the WTO Agreement and Annexure-II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

27. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry para (iv) of Annexure-II of the AD Rules states as follows.

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

The Authority has taken note of arguments of interested parties on injury and causal link and addressed the issues raised at appropriate places. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and the arguments of the interested parties.

a) Demand and market share

28. Authority has defined, for the purpose of the present investigation, demand or apparent consumption of the product in India as the sum of domestic sales of the Indian Producers and imports from all sources. The demand so assessed is given in the table below.

Demand	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (POI)
Total Imports	MT	10,470	8,055	8,758	12,616
Sales – domestic industry	MT	7,378	6,154	4,622	7,669
Demand	MT	17,848	14,209	13,380	20,285
Trend	Indexed	100	79.61	74.97	113.66

It is seen that the demand for the product declined significantly between 2005-06 and 2006-07 and thereafter shown a significant increase.

b) Import volume and market share

29. The Authority has examined the volume of imports of the subject goods as provided by (a) the petitioner (which is based on secondary source import data), (b) information procured by the Authority from the DGCI&S and (c) the responding exporter. It is noted that the volume of imports reported in the DGCI&S is not exhaustive, which appears to be due to the fact that the imports have been cleared in a number of customs classification, as seen from the secondary source data. This was further established from all the imports relating to one particular importer procured from DGCI&S. Therefore, the Authority has relied upon the information received from the secondary sources. On the basis of various import data on record, the import volume from China PR are found to be above the de-minimis levels.

Imports volume from subject country and other countries has been as under:-

Imports in MT	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (POI)
China PR	MT	10,470	8,055	8,620	12,361
Other Countries	MT	-	-	138	254
Total Imports	MT	10,470	8,055	8,758	12,616

It is observed that Chinese imports declined in 2005-06, but increased thereafter. Increase was very significant in the period of investigation. It is also noted that imports from China PR account for very significant proportion of total imports of product under consideration in India.

c) Market share in demand

30. Considering imports from various sources and sales of the Indian Producers, market share of subject imports in demand in India was examined. Factual position is as follows.

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (POI)
Domestic industry	%	41.34	43.31	34.55	37.81
China PR	%	58.66	56.69	64.42	60.94
Other Countries	%	0.00	0.00	1.03	1.25

It is observed that the market share of dumped imports in demand from China PR increased from 58.66% during base year to 60.94% during the POI, whereas the market share of domestic industry declined from 41.34% to 37.81% during the corresponding period. Even though the market share of the domestic industry increased and that of imports declined in POI as compared with preceding year, the market share of the domestic industry in POI was lower than the levels achieved earlier.

d) Share of dumped imports in relation to production

31. Authority observes that the dumped imports from subject country have increased in relation to the production of the domestic industry, as is evident from the following table:

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (POI)
Imports from China	MT	10,470	8,055	8,620	12,361
Production of domestic industry	MT	9003	7938	6200	9533
Dumped Imports in relation to production of domestic industry.	%	116.29	101.46	139.02	129.67

e) Capacity & capacity utilization

32. Capacity and capacity utilization of the domestic industry over the injury period is given in the following table:-

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (POI)
Capacity MT	MT	11,500	11,500	11,500	12,000
Capacity utilization %	%	78	69	54	79

1976 GI/09-7

It is observed that capacity utilization of the domestic industry declined upto 2006-07, but increased thereafter in POI. Domestic industry claimed that lower production in 2006-07 was due to other factors. Though, production of the domestic industry increased again in POI, the same is still low considering that there is significant demand for the product in the Country.

f) **Production**

33. Production of the domestic industry is given in the following table:-

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (POI)
Production MT	MT	9003	7938	6200	9533
Trend	Indexed	100	88.173	68.87	105.88
Demand	MT	17,847	14,208	13,380	20,285
Trend	Indexed	100	79.61	74.97	113.66
Production in relation to Demand	%	50.45	55.87	46.34	46.99

It is observed that production of the domestic industry declined upto 2006-07. However, decline in production was more than decline in demand, which shows that dumped imports led to higher loss of market for the domestic industry in the past. during POI, even when demand increased sharply, the dumped imports prevented the domestic industry to increase its production. Whereas demand increased by about 14%, production increased only by about 6%.

g) **Sales volume**

34. Sales volume of the domestic industry is given in the following table:

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Domestic sales	MT	7378	6154	4622	7669
Trend	Indexed	100	83.41	62.65	103.95
Demand	MT	17,847	14,208	13,380	20,285
Trend	Indexed	100	79.61	74.97	113.66
Market Share of domestic industry in Demand	%	41.34	43.31	34.55	37.81

It is observed that sales of the domestic industry declined steeply till 2006-07. While the demand for the product also declined, the decline in sales was far more than decline in demand. Resultantly, the domestic industry lost significant market share. Demand for the product increased significantly in POI. However, inspite of the same, the domestic industry has not been able to increase its sales volumes to the extent it could produce and sell. In fact, even market share had not gone back to the levels established earlier. Dumped imports are impacting the sales of the domestic industry.

h) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

35. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. For the purpose of this analysis, the weighted average cost of production (COP), weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-Injurious Price (NIP) of the domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject country.

36. The net sales realization was arrived after deducting all rebates and taxes. Landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the CIF value of subject imports. The landed value of imports was compared with net sales realization of the domestic industry and it was found that the dumped imports are undercutting the prices of the domestic industry.

Particulars	Units	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (POI)
CIF Import Price	Rs./kg	76.98	72.18	67.22	78.49
Landed price of imports	Rs./kg	93.30	83.84	76.38	87.20
Selling price	Rs./kg	***	***	***	***
Price undercutting	Rs./kg	***	***	***	***
Price undercutting %	% range	10 to 15	20 to 25	20 to 25	5 to 10
Cost of sales	Rs./kg	***	***	***	***

It is observed that imports are undercutting prices of domestic industry. Wherever the costs were increasing, the Chinese producers were reducing their prices. It is also noted that having lost significant market share in 2006-07, the domestic industry reduced the price difference between the imported product and domestic product in order to regain its market share. Resultantly, the market share of the domestic industry improved in POI.

i) Price Underselling

37. Authority notes that the price underselling is an important indicator of assessment of injury. Non injurious price has been worked out and compared with the landed value of the subject goods to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been evaluated for the domestic producers by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI in accordance with the practice of the Authority as also taking account the decision of Supreme Court. The analysis shows that the landed value of subject imports was significantly below the non-injurious price determined as follows:-

Price in Rs/Mt	Rs/Kg
CIF price	78.49
Landed Price	87.20
Non-injurious price	***
Price underselling	***
% underselling (Range)	35 to 40

j) **Price suppression/depression**

38. The Authority examined whether the effect of the dumped imports was to depress the prices of the like article in India, or prevent price increases which would have otherwise occurred. For the purpose, the Authority examined the trends in cost to make & sell and compared the same with selling price & landed price of imports. It is noted that whereas the cost of production increased consistently over the years, selling price of the domestic industry have increased till 2006-07, but declined in POI. It is also noted that the price increases for the domestic industry in each of the years were significantly lower than the increase in the cost of production. The imports were thus suppressing the prices of the domestic industry in the market.

k) **Profit/Loss**

39. The profitability of the domestic industry is given in the following table

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (POI)
Profit before tax	Indexed	100	28	(55)	(143)
Profit before interest & tax	Indexed	100	46	(22)	(85)
Profit per unit of sales					
Before interest	Indexed	100	56	(35)	(82)
After interest	Indexed	100	36	(85)	(136)

Profitability of the domestic industry declined significantly. Whereas the domestic industry was earlier earning profits (albeit low level of profits), it started suffering financial losses from 2006-07. While petitioner conceded that its losses in 2006-07 were due to an additional factor of low level of production (due to decline in demand), if this factor is adjusted, it would be seen that the profitability declined too steeply in POI.

l) **Examination of other Injury Parameters**

40. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments, other economic parameters

which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analyzed by the Authority as follows;

i) Return on capital employed

41. Information regarding return on capital employed is given in the table below.

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (POI)
Return on Capital Employed - NFA basis	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	49.58	-29.38	-86.00

The Authority notes that return on capital employed for domestic industry has been deteriorated significantly over the injury period to such an extent that the same became negative during 2006-07 and in the POI.

ii) Cash Flow

42. Authority has examined the trends in cash profits in order to examine the impact of dumping on cash flow situation of the domestic industry. Information regarding cash profit of the domestic industry is given in the following table.

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (POI)
Cash profits	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	57	10	(27)

It is seen that the cash profits of the domestic industry steeply declined over the injury period. The decline was consistently occurring every year to such an extent that the domestic industry suffered cash losses in POI.

iii) Factors affecting domestic prices:

43. Change in cost structure, competition in the domestic industry and prices of competing substitutes have been examined for analyzing the factors other than dumped imports that might be affecting the prices in the domestic market. The landed price of subject imports is below the selling price of the domestic industry. It could not be concluded that inter-se competition is to such an extent that the same led to decline in the prices by the domestic industry.

iv) Inventories

44. Inventories with the domestic industry moved as follows –

	Units	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08 (POI)
Closing stock	MT	502	403	369	314
Inventory for no. of days sales	Days	25	28	3	28

It is noted that inventories with the domestic industry were declined during 2006-07, but increased in the POI.

v) Productivity

45. Authority notes that productivity of the domestic industry shows same trend as that of production. Productivity was declining till 2006-07, but increased in POI.

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Productivity per employee	Indexed	100	86	73	114
Productivity per day	Indexed	100	88	69	104

vi) Employment and Wages

46. Authority notes that employment with the domestic industry declined, while wage paid shows increasing trend.

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Employment	Indexed	100	103	95	94
Wages	Indexed	100	101	94	110

vii) Growth

47. The Authority notes that growth of the domestic industry was negative in a number of parameters till 2006-07, which was partly due to decline in demand. Even though growth in volume parameters was positive in POI, the same was still below the growth in demand. In any case, growth in price parameters continued to be negative all along.

viii) Ability to raise capital investment

48. Authority notes that no significant investments were made by the domestic industry. Further, both the companies are multi product companies. However, continued dumping of the product would certainly have adverse impact on the ability of the domestic industry to raise capital investment.

I. Examination of other issues raised by various interested parties

49. With regard to information concerning a number of parameters in the petition, the Authority notes that the petition filed contains separate information with regard to various injury parameters. In any case captive consumption by the petitioner is not very significant. Further, the petition includes information on indexed basis with regard to inventories, profits, employment and capital investment for expansion.

50. The Authority notes that demand for the product has substantially increased in the investigation period as compared to previous year. In fact, in its application, the petitioner alleged that there was a significant decline in demand in 2006-07 leading to decline in sales volumes.

51. It is, however, noted that imports have increased in absolute terms and in relation to production and consumption over the injury period. Even though market share of imports declined in the period of investigation as compared to preceding year, the same is still higher as compared to earlier years.

52. With regard to increase in prices in the period of investigation, the Authority notes that there has been significant change in the prices over the injury period. Even within the period of investigation, the prices moved significantly from a low of Rs *** per Kg. to as high as Rs.*** per Kg. The increase of ***% in overall import price does not imply that imports are not having any adverse price effect on the domestic industry.

53. With regard to production, sales and capacity utilization, the Authority notes that the level of capacity utilization is significantly lower than what could have been achieved by the domestic industry in the absence of dumped imports. Further, the volume achieved by the domestic industry has to be seen along with the price at which the goods have been sold. It is noted that the profitability of the domestic industry steeply deteriorated over the injury period.

54. While it is appreciated that demand for the product has increased, it is noted that the domestic industry could have produced and sold significantly higher volumes, by using unutilized capacities, in the absence of dumped imports. It is noted that the increase in imports between 2004-05 and POI was 2438 MT, whereas the unutilized capacity with the domestic industry in the POI was 2467 MT. In other words, had the dumped imports not increased over the period, the domestic industry could have utilized its full capacity. It could not therefore be accepted that the entire increase in imports was due to shortfall in the Country. In any case, the performance of the domestic industry deteriorated in terms of parameters such as profit/loss, return on investment and cash profits.

55. With regard to alleged unfair advantage to the domestic industry in production of Pesticides as a result of imposition of proposed anti dumping duties, the Authority is of the view that the purpose of anti dumping duties is to eliminate unfair pricing. Contrary to what has been argued by the interested parties, it can be said that access to unfairly priced import to other Pesticides manufacturers is giving undue advantage as compared to those manufacturers who are having their own captive production of DETPC.

56. Reduction in price undercutting in 2007-08 as compared to 2006-07 is because of significant increase in imports in 2006-07 when the demand increased and the domestic industry lost their market share. Domestic industry argued that as a result of this loss of market share in 2006-07, the domestic industry took corrective action in reducing the price gap between the domestic and imported product, results of which could be seen in the market share in the investigation period increasing in favour of domestic industry. However, it is evident that while the demand increased by 2438 MT over the injury period, sales of the domestic industry increased only by 291 MT, whereas the imports increased by 2146 MT. At the same time, the domestic industry had unutilized capacity of 2467 MT in investigation period. It is thus evident that practically entire increase in demand was taken away by the dumped imports in a situation where the domestic industry had unutilized capacities to the extent of increase in demand.

57. While arguing that the petitioner could have suffered losses or low profits due to "other factors", no such "other factors" have been brought to the notice of the Authority. The investigation so far has also not shown any other factor, which could have adversely impacted profitability of the domestic industry.

J. Conclusions on Injury

58. On examination of various injury parameters, the Authority finds that imports from China increased in absolute terms as also in relation to production and consumption in India. Imports of the product were undercutting the prices of the domestic industry in the market. Further, whereas cost of production kept increasing over the injury period, even though the selling prices also increased, the increase in selling price was significantly lower than increase in the cost of production. The imports were thus suppressing the prices of the domestic industry and preventing the price increases that would have otherwise occurred in the absence of dumped imports. With regard to consequent impact of the dumped imports on the domestic industry, it is found that demand for the product declined very significantly upto 2006-07 and consequently production and sales of the domestic industry declined upto 2006-07. However, the decline in production and sales of the domestic industry was more than the decline in demand. Resultantly, the domestic industry lost market share significantly upto 2006-07. Even though the domestic industry regained some market share in POI, the same was much lower than the levels registered earlier.

59. The domestic industry was faced with significant unutilized capacities in a situation where the demand for the product is quite significant in the market. Profitability of the domestic industry declined continuously and so steeply that the domestic industry started suffering financial losses from 2006-07, which increased further in POI. Return on capital employed and cash profits followed the same trend as that of profits. Both return on capital employed and cash profits became negative in POI. Growth of the domestic industry was negative in a number of parameters till 2006-07, which became positive thereafter in respect of volume parameters (even though the domestic industry could have gained higher volumes in the absence of dumping). However, growth in price parameters continued to remain negative all along. It is thus provisionally concluded that the domestic industry has suffered material injury.

K. Causal Link and Other Factors

60. The Authority has examined existence of causal link between the dumped imports and injury suffered by the domestic industry in the light of the arguments of the interested parties and having regard to the Rules in this regard.

L. Effect of other known listed parameters

61. The Authority examined the issue of causal link and other non-attributive factors as laid down in the AD Rules to segregate injury, if any, caused by other factors. In this regard, the following indicative factors as laid down in the AD Rules have been examined.

(a) Volume and Prices of imports from third country

The Authority notes that there are negligible imports of the product under consideration from other countries. Imports from third countries could not have caused injury to the domestic industry.

(b) Trade restrictive practice and competition between the foreign and domestic producers

The Authority has not found any trade restrictive practice followed by the domestic industry and other Indian producers. The Authority notes that the subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market.

(c) Contraction of demand or Changes in the pattern of consumption

The Authority notes that demand for the product showed significant decline during 2005-06 and 2006-07. Consequently, sales volumes of the domestic industry and resultantly production & capacity utilization of the domestic industry suffered upto this period. However, it is also noted that the decline in sales volumes of the domestic industry was more than the decline in demand for the product. In the POI, the demand registered significant increase once again. Even though the domestic industry was able to regain part of its market share, the same still significantly lower than earlier years. Further, the profitability of the domestic industry continuously declined over the injury period. The Authority thus concludes that injury to the domestic industry was not due to contraction in demand.

(d) Development in Technology

There is no development in technology for production of the product. Possible development in technology therefore, is not a reason for any injury to the domestic industry.

(e) Export performance of Domestic Industry:

Period	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Volume in Mt	***	***	***	***
Indexed	100	96	96	122

Domestic industry does not have significant exports activities for the product. However, export performance has declined during 2005-06 and 2006-07 and improved during POI as compared to base year. Therefore, any possible decline in export performance is not a cause of any injury. In any case, the Authority has considered only domestic operations in order to ascertain impact on price parameters.

(f) **Productivity of the Domestic Industry**

Productivity of the domestic industry declined upto 2006-07, but increased thereafter in POI. However, regardless of changes in productivity levels, the profitability of the domestic industry showed continued decline.

From the foregoing, the Authority provisionally concludes that there is no evidence of injury being caused due to other factors.

M. Factors establishing causal link

62. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has materially deteriorated over the injury period. The causal link between dumped imports and the injury to the domestic industry is established on the following grounds:

- a) Imports were resulting in price undercutting in the market. Consequently, the volume of imports kept increasing even in a situation where the domestic industry was having unutilized capacities.
- b) The price undercutting being caused by the domestic industry resulted in a situation where the domestic industry was unable to increase its selling prices in proportion to increase in the cost of production.
- c) Price suppression caused by the dumped imports resulted in deterioration in profitability to such an extent that whereas the domestic industry was earning profits till 2005-06, it started suffering financial losses in 2006-07, which increased further in POI.
- d) Deterioration in profitability caused by the dumped imports led to deterioration in performance of the domestic industry in terms of return on capital employed, cash profits and consequently cash flow.

The Authority is of the view that the above grounds clearly establish existence of causal link between the dumped imports and injury to the domestic industry.

N. Magnitude of injury and injury margin

63. The Authority has determined non-injurious prices for the domestic industry taking into cost of production of the domestic industry. This non-injurious price of the domestic

industry has been compared with the weighted average landed values of the subject imports to determine injury margin. The injury margins have been worked out as follows:

	Unit	Yangxin Chentian	Lianyungang Liben	Xingtai	Zhejiang	Non- cooperative
Non-injurious price	US\$/Kg	***	***	***	***	***
Landed price of imports	US\$/Kg	***	***	***	***	***
Injury margin	US\$/Kg	***	***	***	***	***
Injury margin	% Range	40 to 50	30 to 40	15 to 25	30 to 40	80 to 90

O. Conclusions:

64. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority as recorded in this finding, the Authority provisionally concludes that:

- (a) The product under consideration has been exported to India from China PR below its normal value, thus resulting in dumping of the product.
- (b) The domestic industry has suffered material injury due to dumping of the product under consideration.
- (c) The material injury has been caused by the dumped imports from China PR.

P. Indian Industry's Interest & other issues

65. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

66. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the antidumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

Q. Recommendations

67. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspect of dumping, injury and causal links. Having initiated and conducted a preliminary investigation into dumping, injury and causal links in terms of the AD Rules laid down and having provisionally established positive dumping margin as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of provisional duty is required to offset dumping and injury, pending completion of the investigation. Therefore, Authority considers it necessary and recommends imposition of provisional anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject country in the form and manner described hereunder;

68. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of provisional anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, provisional antidumping duty equal to the amount mentioned in Col 8 of the table below is recommended to be imposed from the date of this notification, in the event of acceptance of these recommendations by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from the China PR

SN	Heading/ subheading	Description of goods	Country of origin	Country of export	Producer	Exporter	Duty amount	Unit	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1	29.30	Diethyl Thio Phosphoryl Chloride (DETPC)	China PR	China PR	Yangxin Chentian Chemical Industry Co., Ltd.	Yangxin Chentian Chemical Industry Co., Ltd.	0.925	Per Kg	US\$
2	29.30	Diethyl Thio Phosphoryl Chloride (DETPC)	China PR	China PR	Lianyungang Liben Agro- chemical Co., Ltd.	Lianyungang Liben Agro- chemical Co., Ltd.	0.734	Per Kg	US\$
3	29.30	Diethyl Thio Phosphoryl Chloride (DETPC)	China PR	China PR	Xingtai Pesticide Co., Ltd.	Xingtai Pesticide Co., Ltd.	0.478	Per Kg	US\$
4	29.30	Diethyl Thio Phosphoryl Chloride (DETPC)	China PR	China PR	Zhejiang Xinnong Chemical Co., Ltd.	Zhejiang Xinnong Chemical Co., Ltd.	0.770	Per Kg	US\$
5	29.30	Diethyl Thio Phosphoryl Chloride (DETPC)	China PR	China PR	Any combination other than the above		1.362		Per Kg
6	29.30	Diethyl Thio Phosphoryl Chloride (DETPC)	China PR	Any country other than China PR	Any	Any	1.362	Per Kg	US\$
7	29.30	Diethyl Thio Phosphoryl Chloride (DETPC)	Any country other than China PR	China PR	Any	Any	1.362	Per Kg	US\$

R. Further Procedure

69. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:-

- (a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
- (b) Exporters, importers, the applicant and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the dispatch of these preliminary findings. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;
- (c) The Authority would hold a hearing to hear the views of various interested parties orally;
- (d) The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary;
- (e) The Authority would disclose essential facts as per the AD Rules before announcing final findings.

R. GOPALAN, Designated Authority